ओ३म्

सत्यापन क्रमांक : RAJHIN/2015/60530

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ६ अंक : ६ १ सितम्बर २०२० जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० र वार्षिक

महर्षि दयानन्द सरस्वती को विदित था कि सत्यद्रोही लम्पट, विदेशी सत्ता; लम्पट, विलासी देशी सत्ताएँ; इनके दलाल, ईसाई और मुस्लिम सहित सब सम्प्रदाय; ऋषिवचनों को न समझने वाले मूर्ख विरुद्ध मानने वाले स्वार्थी आदि उनके शत्रु तो असंख्य है। किन्तु पेट में दिए विष का सुनिश्चित साधन अज्ञ, भीत या लालची रसोईया ही व्यर्थ मारा जाएगा। उसका तारक कोई अन्य हो ही नहीं सकता था। रसोइये को निरपराध बताने वाला विषदाता किसे बताता ? या आप बनता ? अपने अपराधियों को भी क्षमा करने और करा देने वाले दया के सागर महर्षि दयानन्द सरस्वती निरीह रसोइये को प्राणरक्षा, पलायन व निर्वाह हेतु धन दे ''अनुपम क्षमादान'' करते हुए।

हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर) को सार्थक करें।

महर्षि दयानंद की अवधारणा और आर्यसमाज के आन्दोलन से सिंचित आर्यभाषा/राष्ट्रभाषा के गौरव की रक्षा आर्यों को करनी है।

जन्म से गुजराती भाषी और संस्कृत में निष्णात महर्षि दयानंद सरस्वती ने जगत् का पूर्ण हित सर्वतंत्र सिद्धान्त से करने हेतु लिखे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को हिन्दी में रचा। इस ग्रन्थ के संशोधित और परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण की भूमिका का आरंभ में उनके हिन्दी प्रेम से सने शब्द पढ़िये: –

"जिस समय मैंने यह ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' बनाया था, उस समय और उस से पूर्व संस्कृत भाषण करने, पठन–पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण से मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था, इससे भाषा अशुद्ध बन गई थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है। इसलिए इस ग्रन्थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी वार छपवाया है। कहीं–कहीं शब्द, वाक्य रचना का भेद हुआ है सो करना उचित था, क्योंकि इसके भेद किए बिना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी, परन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है, प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है। हाँ, जो प्रथम छपने में कहीं–कहीं भूल रही थी, वह निकाल शोध कर ठीक–ठीक कर दी गई है।"

हिन्दी का मान सर्वाधिक बढ़ाते हुए महर्षि ने अन्य ग्रन्थों के अतिरिक्त वेदभाष्य भी हिन्दी में किए, जो उनसे पूर्व नहीं मिलते।

महर्षि के इस हिन्दी प्रेम को अक्षुण्ण रखते हुए आर्यसमाज ने परतंत्रता में अंग्रेजी, अरबी व फारसी का बोलबाला होते हुए भी अपने यहाँ सारी कार्यवाहियाँ हिन्दी में करने की परम्परा डाली। यही नहीं हिन्दी रक्षा आन्दोलन का ऐतिहासिक कार्य भी आर्यसमाज ने ही किया।

आज सरकारें अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोल रही हैं। बारबार के संकल्प के बाद भी अंग्रेजी राजभाषा बनी हुई हिन्दी की सौत है। उद्योग, व्यापार, न्यायालय, विधायिका, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा, व्यवहार, परिवार और बोलचाल में अंग्रेजी का चलन बढ़ रहा है। हिन्दी के शब्द बोलने पर लोग सिर खुजाते हैं। वह शब्द यदि संस्कृत निष्ठ हो तो ऐसे देखतेहैं, मानो उन्हें गुलाम बना रहे हैं। हिन्दी समाचारपत्र और पत्रिकाएँ तक देवनागरीलिपी में अंग्रेजी परोस रही हैं।

आर्यो याद रखें, हिन्दी कुछ मीटर दूर तो संस्कृत किलोमीटर दूर होगी। संस्कृत विहीन समाज असंस्कृत ही होगा। बचाना है तो हिन्दी को पहले बचाओ। तय करो कि हिन्दी के ज्ञात शब्द का अंग्रेजी विकल्प नहीं बरतेंगे।

हिन्दी की वृद्धि के साथ इसकी सौतनों का ह्रास सायास करना आवश्यक है। जो सब भाषाओं को समान मानकर चलने की बात करता है वह हिन्दी का दुश्मन है। राष्ट्रभाषा सबसे आगे, शेष उसके समान नहीं हो सकती, पीछे ही रहे।

24/9/20

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ६ अंक : ६

दयानन्दाब्द : -१९७

विक्रम संवत् : माह-आश्विन २०७७

कलि संवत् ५१२०

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,१२१

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक : 0291-2516655

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज

के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय....	४
२.	प्रार्थना-विषय......	१३
३.	वेद-वचन.....	१४
४.	राजा होते हुए भी अकेला....	१६
५.	दयानन्द कौन है ?.....	१७
६.	अथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	२२
७.	आर्यसमाज का इतिहास....	२५
८.	ऋषिगाथा....	२८
९.	श्राद्ध और तर्पण....	३१

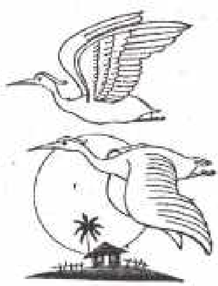

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

सम्पादकीय

कोरोना वायरस कहर भी कुबेर भी

वुहान कोरोनावायरस निश्चितरूपेण चीन द्वारा दुनिया में ज़ानबूझकर फैलाया गया है। कोरोनावायरस के प्रति जानकारी साझा करते ही डॉक्टर के खिलाफ कार्यवाही करना, दुनिया भर से कोरोनावायरस की प्रति फैलाव के तरीके और जांच और इलाज के बारे में सत्य छुपाते हुए चीन ने ३ जनवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन को कोरोनावायरस में औपचारिक रूप से सूचित किया, किंतु अन्य कोई जानकारी नहीं दी। चीन के सरकारी प्रचार माध्यमों में मार्च के माह में वुहान में बाहर के प्रांतों से आए ४२००० से भी अधिक चिकित्सा कर्मियों की वापसी की खबरें हैं;वुहान में भी चिकित्सा कर्मी होंगे ही। अर्थात् कुल मिलाकर लगभग पचास हजार चिकित्साकर्मी वुहान में कार्यरत थे, और मार्च आरंभ होते होते 80 हजार से भी कम कोरोना संक्रमण का आंकड़ा चीन बता रहा था। कोरोना संक्रमण का चीन का आंकड़ा आज की तिथि में ८५१३४ एवं सक्रिय केस मात्र १८0 है जिनमें से तीन गंभीर मामले हैं। क्या कोई मान सकेगा कि प्रत्येक दो से भी कम रोगियों के लिए चीन ने एक चिकित्सा कर्मी तैनात् कर रखा था। मानवीय मूल्यों से रहित लौहभित्तिनीति के पालक चीन के लिए धूप में खड़े होकर भी रात्रि बताना संभव है।अतः विश्व शत्रु चीन तो अपराध करेगा ही। चीन सकल विश्व में अपने पैर पसार चुका है और बिना किसी की चिंता किए विश्व के सवा दो सौ पन्द्रह देशों में कोरोना के माध्यम से देश व नागरिकों का विनाशक चीन तो अपराधी है ही।

अभी चीन में संक्रमण के आंकड़े प्रतिदिन १0 के आसपास आ रहे हैं और विश्व के १३७ देशों में प्रतिदिन संक्रमित होने वालों की संख्या ११ से लेकर भारत में ६0000 को छू रहे हैं। लौहभित्तिनीति वाला चीन यदि तथ्य छुपा नहीं रहा है तो लॉकडाउन और संक्रमित व्यक्ति का एकांतवास से ही कोरोना को पराजित करने का मार्ग है। मैंने कहीं यह भी जाना है कि एक अंतर्राष्ट्रीय बैठक में चीन ने लोकतंत्र के बजाय तानाशाही में नियंत्रण आसान होने की बात कही थी। लोकतांत्रिक देशों द्वारा इसका विरोध होने पर चीनी प्रतिनिधि नाराज भी हुआ। भारत की दशा देखकर तो चीन की बात सच प्रतीत होती है। **यदि लोकतंत्र का तात्पर्य समर्थ को सुविधा और दीन को दुख देना होता है, तो तानाशाही ही ठीक है।**

खैर, किन्तु हम चीन के सहज शिकार होने के अतिरिक्त क्या कर रहे हैं? जनवरी माह के पूर्वार्द्ध में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने निर्देश जारी किए और भारत सरकार ने भी अविलंब उन दिशानिर्देश को जारी कर दिया। कोरोनावायरस भारत में जहाँ स्थानीय व्यवस्था के साथ मिलकर जनता पर कहर बना हुआ है, वहीं कुछ लोगों के लिए यह कुबेर बनकर आया है। यह भारत में उत्पन्न वायरस नहीं है। जनवरी के अंतिम सप्ताह में भारत में पहली कोरोनावायरस की रोगी केरल में मिली जो चीन के कोरोनावायरस उत्पत्ति स्थल वुहान प्रांत में मेडिकल की छात्रा थी। जिस दिन कोरोना की प्रथम रोगी केरल में ज्ञात हुई, उस दिन दृष्य–श्रव्य और मुद्रित प्रचार माध्यमों में उसी की जोरों से चर्चा और संवेदना थी! जब प्रथम मृत्यु हुई तब भी यही हाल था! किंतु कोरोना से निपटने के तरीकों से ये संवेदनाएँ इतनी मर चुकी है कि प्रतिदिन लगभग एक

लाख संक्रमण होने का आंकड़ा छूने के बाद भी हम छूट देते चले जा रहे हैं। सर्वप्रथम विचार करते हैं भारत में किन कारणों से कोरोना की यह भयावह स्थिति आई? विस्तार भय से अपनी बात को संक्षिप्त रखने का प्रयास करता हुआ निवेदन करता हूँ–

1. कोरोनावायरस वुहान से निकला है, भारत में पैदा नहीं हुआ है; आयात हुआ है।
2. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ११ जनवरी को कोरोना से लड़ने के लिए आवश्यक तैयारियों का विवरण जारी कर दिया था और १४ जनवरी को बता दिया था कि यह मानव से मानव में फैलता है और अत्यधिक तेजी से फैलता है। १४ जनवरी तक संक्रमण के तरीके ज्ञात हो चुके थे। क्वारंटाइन की १४ दिन की अवधि मालूम हो चुकी थी। महामारी का तात्पर्य ही छूत की बीमारी होता है। भारत सरकार के संबंधित मंत्रालय विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ–साथ उसी दिन यह निर्देश जारी करता रहा है। कोरोनावायरस ५से ७ दिन में लक्षण प्रकट कर देता है। इसके पश्चात्

वे कारण जिनसे भारत वुहान कोरोनावायरस का ग्रास बनता चला जा रहा है–

3. विदेश से आए किसी व्यक्ति को यदि १४ दिन क्वारंटाइन में रख दिया जाता, तो करोना नहीं फैलता। जान की धमकी देने के झूठे मामले में भी हजारों रुपए की जमानत लिए बिना व्यक्ति को छोड़ा नहीं जाता है। किन्तु कोरोना से संक्रमित व्यक्ति पूरे देश के जनता के प्राण संकट में डाल सकता था। ऐसे व्यक्ति को सिर्फ स्वयं की लिखित प्रतिबद्धता पर जनता को संक्रमित करने के लिए छोड़ा जा रहा था।
4. जितने टेस्ट आज किए जा रहे हैं उनमें पैसा बर्बाद ही नहीं होता, यदि विदेश से भारत में आए हर व्यक्ति का टेस्ट तुरंत किया जाता और अंडरटेकिंग पर नहीं वरन् टेस्ट के बाद एकांतवास में रहे व्यक्ति के नेगेटिव आने के बाद ही उसे छोड़ा जाता, तो भारत में कोई नुकसान ही ना होता।
5. कोरोना के लक्षणों में जुकाम और बुखार यानी शरीर का तापमान मुख्य था। विदेश से आने वाले यात्रियों को पता था कि एयरपोर्ट पर थर्मल स्क्रीनिंग से बच गए तो आराम से घर पहुंच सकते हैं। तब जिन लोगों को बुखार था उन्होंने भी पेरासिटामोल ली और तापमान कम कर के घर निकल गए। अरे! विदेश में भी तो परिवार से दूर ही थे!१४–१६ दिन यहाँ भी रह जाते, तो देश संकट में ना पड़ता। किन्तु देश के लिए सोचने की प्रथा तो नेता (अपने पीछे ले जाने वाले) लोग भी छोड़ चुके हैं। सैनिकों को छोड़कर आदर्श और उदाहरण कहाँ और कौन प्रस्तुत कर रहा है। होड़ तो येन केन प्रकारेण धन कमाने और उस धन से विलासिता के साधन, ईमान और इंसान खरीदने की लगी है! देश जाए भाड़ में!
6. एयरपोर्ट पर आने वाले यात्रियों का तापमान सामान्य थर्मामीटर से ना लेकर स्पर्शरहिततापमापी से लेने वाले अर्थात् आगंतुक से स्पर्श से बचने वाले लोग, इन्हीं लोगों को बिना सुनिश्चित किए परिजनों, स्वजनों और आम जनता से स्पर्श करके कोरोना का प्रसार करने को सिर्फ प्रतिबद्धता लिखवाकर भेज रहे थे।
7. सब्जी वाला, दूधवाला, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करने वाला हाथों को ढंककर

सामग्री बेचे– यह जॉचने को व्यवस्था भी थी और नागरिक भी। किन्तु दूध दूहने वाला और फल तरकारी तोड़कर लानेवाले और आवश्यक वस्तुएँ बनाने वालों की जॉच संभव भी नहीं। ठेलों वालों से बहुत लोग संक्रमित हुए।

8. दिल्ली में तबलीगी जमात के जलसे में लगभग ८0–६0 देशों के प्रतिनिधि आए थे, जिसकी कोई सूचना प्रशासन के पास नहीं थी। पूरे संप्रदाय को यह संदेश देशभर में दिया गया था कि कोरोनावायरस अल्लाह का अजाब है जो इमान वालों पर असर नहीं करेगा और दूसरों को नहीं बख्शेगा। यह संदेश सिर्फ दिल्ली में ही नहीं, वरन् देश के कोने कोने में पहुंचा, जिसका परिणाम यह था कि कोरोनायोद्धाओं पर हमले किए गए। अस्पताल में इस संप्रदाय के संक्रमित लोगों ने महिला चिकित्सा कर्मियों के समक्ष और साथ अश्लील हरकतें की! अल्लाह का नाम लेकर अपने नियत पलंग या कक्ष में बैठने की बजाए ये लोग घूम घूम कर लोगों को स्पर्श करने, डराने और कोरोनावायरस का प्रसार करने में संलग्न रहे। इन घटनाओं के वीडियो बहुत प्रचारित हुए। सरकार द्वारा कोरोना के विरुद्ध युद्ध के आरंभ में दी जाने वाली सभी मुफ्त सरकारी सुविधाओं का पूरा पूरा उपभोग किया और स्वयं ठीक हो कर पूरे देश को ऐसी अवस्था में झोंक दिया कि आज पीड़ितों को खाली पलंग भी नहीं मिल रहे और लाखों रुपए खर्च करने पड़ रहे जो अलग। इनके विरुद्ध ठोस और त्वरित कार्यवाही?

9. ठेका प्रणाली में कमीशन खाने और जनता का खून पीने वाले सरकारी अमले में रिसर्च और डेवलपमेंट यानी अन्वेशणवृत्ति और विकास की क्षमता शून्य हो चुकी है। ११ जनवरी को विश्व स्वास्थ्य संगठन के सलाहपत्रक को पढ़ने मात्र से कोरोना की भयंकरता का अनुमान लग जाता है इसके पश्चात भी,

10. मानकों की जॉच किए बिना छः दशकों से निरन्तर धोखा दे रहे चीन से स्तरहीन टेस्टिंग किट मंगवाए। आज भी मान रहे हैं कि तीस प्रतिशत परीक्षण परिणाम सही नहीं है। तेरह दिन बाद विवाह करने वाले मेरे पड़ौसी युवक ने दस मिनट के अंतर पर दिए दो सेंपलों में एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक आने पर नकारात्मक व्यवस्था का उत्पीड़न झेला है। अन्य लोगों और राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश तक के दो नमूनों में एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक आया है। इसका दायित्व कोई ईमानदारी से लेगा! आदत तो दायित्व नहीं खरीद और ठेकों में कुछ और ही लेने की पड़ी है।

11. आज दिन तक भी कोरोना पीड़ितों की पहचान छुपाई जा रही है मानो कोरोना पीड़ित व्यक्ति बलात्कार पीड़ित अबला हो।किन्तु बिना परीक्षण किए छुट्टी देते समय उसका नाम और पता जारी किया जा रहा है। जबकि होना यह चाहिए कि एक वेबसाइट पर कोरोना पीड़ित की पहचान राज्य, जिले, तहसील, गॉव या क्षेत्र, मोहल्ला, गली और मकान संख्या के साथ मिलनी चाहिए, ताकि लोग जान सकें कि हमें खतरा किससे है। आरोग्यसेतु का प्रचार किया गया, जो एक ही छत के नीचे कोरोना संक्रमित के असंक्रमित परिजनों को कई बार 'अपडेट और सिनकोनाइज' कर लेने के बाद भी सुरक्षित बताता है। हजारों रुपए की दवाएं सरकार देने का दावा करती ही है; दहाई में

खर्च और लगता, उसे एक माह तक विशेष कोरोना जैकेट पहनने को रोगी को बाध्य किया जाता, तो लक्षणहीनों को तो क्वारंटाइन करने की भी जरूरत नहीं रहती और कोई संक्रमित भी नहीं होता।

12. संक्रमण के लक्षण पैदा होने के बाद उसकी जॉच करके क्वारंटाइन का कोई फायदा इसलिए नहीं मिल रहा है कि, उसके परिजन जिनमें लक्षण नहीं है, वे तब तक मुक्त विचरण करते हैं जब तक जॉचे गए परिजन की रिपोर्ट संक्रमित की नहीं मिलती और तब वे स्वयं टेस्ट करवाते हैं। इस अवधि में वे अपने परिवार के बाहर के अनेकों लोगों को संक्रमित कर चुके होते हैं। यदि संक्रमित होते हुए भी परिवार में किसी को लक्षण नहीं आते तो वह तो लक्षणहीन वाहक बना कोरोना विस्फोट का आधार तैयार करता है। बिना लक्षण वालों की जॉच अधिक लाभदायक है। किन्तु मोटी तनख्वाह के अतिरिक्त कमीशन पाने के लिए ठेकों से हर कार्य या खरीद करने का आदी देश का सुविधा भोगी, पर कर्त्तव्य पालन में लकवाग्रस्त विशशज्ञ वर्ग जॉच सुविधाएँ उपलब्ध कराने में असमर्थ रहा। प्रत्यक्ष और प्रकट प्रकरण पर भी शिकायत मिलने पर जॉच का आश्वासन दिया जाता है जिनका परिणाम कभी नहीं मिलता।

13. प्रतिदिन हजारों की संख्या में बढ़ रहे संक्रमण को चीन ने लगभग सवा महीने में नियंत्रण में ले लिया और आज १0 का आंकड़ा प्रतिदिन कभी–कभी छूता है। अमेरिका सहित आलोचकों को जवाब देते हुए चीन ने सख्त लॉकडाउन को ही कोराना को पराजित करने का मार्ग बताया, हालांकि चीन अब भी यह नहीं बता पाएगा कि जब उसका लॉकडाउन सफल हो गया तो दहाई में ही सही, संक्रमण क्यों फैल रहा है? क्या भारत के किसी जिम्मेवार ने इस दिशा में कोई शोध की या करवाई?

14. भारत में जिस तरह अच्छी मंशा से लागू की गई नोटबंदी को अक्षम, भ्रष्ट और लापरवाह व्यवस्था ने असफल कर दिया था; ठीक उसी तरह पैसे को माई बाप समझने वाले, किसी भी स्थिति को गंभीरता से ना लेने वाले, हर स्थिति में पैसा बनाने के उपाय खोजने वाले और अपने कर्तव्य पालन के प्रति कभी गंभीर ना रहने वालेशासनतंत्र ने लगभग ढाई महीनों के लॉकडाउन को भी असफल कर दिया।

15. सरकार का दावा था कि देश की अस्सी करोड़ जनता को दो रुपये प्रति किलो की दर से प्रति व्यक्ति प्रति माह ७ किलो गेहूं दिया जाएगा उसमें भी ३ महीने का अग्रिम गेहूं दिया जाएगा। अगर मार्च से मई का ३ महीने का अनाज अर्थात् प्रतिमाह का ५ अरब ६0 करोड़ किलो या तीन माह का १६ अरब ८0 करोड़ किलो अर्थात एक करोड़ अड़सठ लाख टन गेहूं वितरित हो गया होता। ऐसी स्थिति में देश में निरीह श्रमिकों का पलायन नहीं होता। पता नहीं यह अनाज मैदामिलों में गया या आटामिलों में! एक बार सरकार को यह भी सुनिश्चित भी करना चाहिए कि क्या सार्वजनिक वितरण प्रणाली में ८0 करोड़ लोग पंजीकृत है? यदि हाँ! तो इसके साथ उन ६0 करोड़ लोगों को भी जोड़ना चाहिए, जिनको लॉकडाउन के दौरान जो जहाँ है, वहाँ से नहीं हिलने देने के लिए सरकार मुफ्त में भोजन बांटने वाली थी।८0 करोड़ को सस्ता राशन और ६0 करोड़ को मुफ्त भोजन

अर्थात १४० करोड़ भारतीयों को सरकार दाना पानी देती तो १३५ करोड़ की जनसंख्या वाला भारत लॉकडाउन में बेहाल नहीं होता!किन्तु**शर्म सुलभ नहीं है, क्योंकि बिना पैसे मिलती है! इसलिए गरीब के पास ही होती है! सरकारी अमले को तो बेशर्मी जैसी महंगी चीजें चाहिए।**

<u>क्या हम अब भी कोरोना का मात्र दे सकते हैं?– नहीं!</u>

<u>कारण?</u>

16. हमारा तंत्र इतना निकम्मा है कि अपना दिमाग बिना श्रम के पैसे कमाने के अलावा और कहीं लगाता ही नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी के अनुपालन में खरीद का काम कर लिया, किन्तु उसके निहितार्थ देखकर तदनुरूप स्वविवेक से कोई निर्णय लेने की क्षमता उनमें नहीं है। अन्यथा प्रतिबद्धता लिख कर भी विदेश से आया कोई भी व्यक्ति बिना क्वारंटाइन अवधि पार किए भारत की जनता से संपर्क नहीं कर सकता था, और भारत में कोरोना का आयात भी संभव नहीं था। कृपया अन्य विकसित देशों से तुलना न करें। अमेरिका में भी जानबूझकर कोरोना फैलाने वाले लोग थे, जिनपर आतंकविरोधी कानून लागू करने की चेतावनी अमेरिकी प्रशासन को देनी पड़ी। भारत में सुनियोजित रूप से कोरोना फैलाने वाले सामने हैं। कार्यवाही?शून्य!!
17. देशहित से बड़ा कोई और हित नहीं है तो मौलाना साद और तबलीगियों के साथ–साथ कोरोना योद्धाओं पर पत्थर फेंकने वालों पर त्वरित कार्यवाही क्यों नहीं की गई थी? जबकि यह देश को संकट में डालने की योजनाबद्ध चाल थी जिसके कारण देश को लाखों करोड़ं रुपयों का नुकसान हो चुका है, हजारों जाने जा चुकी है। ये जानें भारत के बाहर बनाए गए वुहान कोरोनावायरस के कारण गई है। अतः उत्तरदायित्व का निर्धारण होना ही चाहिए।**अन्यथा चीन की लैब में बना कोई और विषाणु भविष्य में इस देश का तो विनाश कर ही देगा। यदि आप उन वाहकों को नहीं ढूंढ पाते हैं तो धिक्कार है शासक और शासन का भाग होने पर!**
18. देश के स्वास्थ्य मंत्री बयान देते हैं कि आयुर्वेद और योग मैं इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह कोरोनावायरस का मुकाबला कर सके। सोचें! अंग्रेजी आक्रमण तक तलवारों से युद्ध होता था, जिनमें घायलों को स्वदेशी वैद्य और विदेशी ज़र्राह स्नेहलेप लगाकर ठीक करते थे। ८० घाव खाने वाले राणा सांगा भी पुनः पुनः युद्ध करते थे। मेरा अनुभव!तेज गेंदबाज की गेंद पैर के अंगूठे पर लगने से काले पड़े नाखून वाला खिलाड़ी १५ दिन में फुटबॉल खेलना चाहता था। सभी अस्पतालों में ताजे नाखून के लिए काले नाखून को हटाने और नया मजबूत होने तक २ महीने का समय बताया गया जिसमें फुटबाल खेलने से खिलाड़ी चूक जाता। आयुर्वेदिक लेप उस पर किया गया और १५ दिन से पूर्व काला नाखून अपने आप हट गया, जिसके नीचे नया नाखून तैयार था और वह खिलाड़ी फुटबॉल खेला। सरकार चिकित्सा सुविधा कितनेप्रतिशत जनता को मुहैया करवा पाई है और कितनी जनता आज भी बिना एलोपैथिक चिकित्सालय, घरेलू उपचार मात्र से ठीक होती है। फिर भी विश्वास नही! क्योंकि कमीशन नहीं; **गुलामी की भावना गई नहीं;**

अपनी थाती से प्यार नहीं! क्या देश के स्वास्थ्य मंत्री से लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन तक आज यह दावा कर सकते हैं कि एलोपैथी की दवा विशेश कोरोनावायरस का सटीक इलाज है। यदि हाँ, तो मृतक संख्या लाखों से करोड़ों की ओर अग्रसर क्यों?एलोपैथी प्रयोगशालाएँ जल्दी से जल्दी कोरोना टीका बनाने की होड़ में है! प्राण बचाने के लिए या पैसा कमाने के लिए– सब जानते हैं! पतंजलि द्वारा कोरोनिल की सूचना पर नौंचने के लिए गिद्धों की तरहझपट पड़ने वाले इस देश के कमीशन.खोर लोग, धन की तिजोरी खोलें और टीके के लिए पलक पॉवड़े बिछाएरूसी टीके की बिना परीक्षण खरीद को तैयार है!

19. वैसे आयुर्वेदिक क्लिनिकल ट्रायल देश में बहुत जगह हुआ है और सफल रहा है। सरकार इसकी घोषणा क्यों नहीं करती?इन पंक्तियों का लेखक बिना एक भी अंग्रेजी दवाई लिए वैद्यराजजी द्वारा दिए आयुषकाढा, गिलोय घनवटी और त्रिभुवनकीर्तिरस से कोरोना से उबर चुका है। लक्षण से आरंभ करके रिपोर्ट आने तक एक चुटकी सौंठ और सात आठ बताशों का काढ़ा दिन में तीन बार लेता रहा था। ऐसे **सक्षम आयुर्वेद पर विश्वास करते हुए स्वामी रामदेव की घोषणा के बाद ही सही, एक बार अपनी तरह से भी क्लिनिकल ट्रायल कर लेते! लेकिन........**

20. दो उदाहरण देखें!**पहला उदाहरण** पीपीई किट पहने, सैनिटाइजर और साबुन का निरंतर उपयोग करते एलोपैथी के डॉक्टर अस्पतालों में रस्सी लगाकर रोगी से कई फीट दूर बैठते हैं, दूर से ही बात करते हैं, मरीज के हाथ भी नहीं लगाते! दूसरा उदाहरण पीपीई किट पहने सफाईकर्मी, सैनिटाइजर है तो ठीक, नहीं तो ठीक, कोरोना से मरे रोगी का शव हाथ टांग पकड़ कर ले जाते हैं, चिता सजाते हैं। संभव है चिता सजाते लकड़ियों के कारण उनके किट क्षतिग्रस्त हो और वायरस प्रवेश भी कर सके, फिर भी वह दाहसंस्कार करके या जमींदोज करके आते हैं। कोरोना से पहले यही एलोपैथिक डॉक्टर मरीज के पेट दुखने पर हाथ से दबा कर यह तो पता लगा ही लेते थे कि समस्या यकृत में है, बड़ी आंत में है, छोटी आत में है या अन्यत्र! अब बचाव के सारे साधन अपनाकर भी सब छोड़ दिया! सफाईकर्मी से भी डरपोक।ये लोग पीपीई किट व अन्य साधनों पर पैसे बर्बाद क्यों करते है? क्यों सैनिटाइजर पर पैसे बर्बाद करते हैं? क्यों इनके ५0 लाख के बीमे की भारी भरकम किश्तें भरी? ऐसे चिकित्सकों के रहते क्या कोई भी महामारी समाप्त हो सकती है?

21. प्लेग के दिनों में सेवाभावी आर्यजनों, सन्यासियों और डॉक्टर कोटनीस जैसों को याद करो।इन डॉक्टरों से तो आयुर्वेदिक चिकित्सक ही अच्छे, जो काढ़े पर विश्वास करके मरीज से छुआछूत नहीं करते! मुझे वैद्यराजजी ने देखा था और जब मैंने उनको फोन किया कि श्रीमान्, मैं कोरोनाग्रस्त हूँ, तो शान्तिपूर्वक कहते हैं– कोई बात नहीं! मुझे चिंता नहीं है!सावधानी रखता हूँ, साबुन से हाथ भी धोए थे और आयुर्वेद में उपचार भी है। मैं सोचता रह गया कि इन वैद्यजी की जगह कोई एलोपैथिक चिकित्सक मेरे पेट, कमर, नाड़ी को नंगे हाथों दबाकर मेरे दर्द का कारण जानने का प्रयास करता और फिर

उसे पता चलता कि मैं कोरोनाग्रस्त हूँ तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होती?एक उदाहरण दे ही देता हूँ।५५ वर्ष से अधिक आयु के सेवारत कर्मियों की चिकित्सा परीक्षा में ईसीजी भी हो रही थी। एक कर्मचारी ने प्रश्न कर दिया कि जिस टेबल पर लेटा कर ईसीजी हो रही है उसे बिना सैनिटाइज किए दूसरे व्यक्ति को लेटाया जा रहा है–यह कैसीसावधानी है?डॉक्टर से संवाद के बीच कर्मचारी के मुँह से निकल गया कि डॉक्टर होकर भी सावधानी का ध्यान नहीं रखते तो क्या सीखा। समूह अ के राजपत्रित अधिकारी होने के गर्वयुक्त उस चिकित्सक ने जो सीखा था, उसका प्रदर्शन करते हुए कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु पत्र लिखाने के लिए सारे परीक्षण आधे पौन घंटे तक स्थगित करके पूरे हॉल को सिर पर चढ़ाए रखा! यूनियन वाले आए तब मामला शांत हुआ। यह सहनशीलता है! वह भी तब जब गलती स्वयं डॉक्टर की थी। सीधी भाषा में कहूँ तो इस कोरोनाकाल में डॉक्टरों के लिए कोरोनाग्रसत या स्वस्थ मरीज भी छातीकूटा और अछूत बन गया है। किंतु आज भी योग और आयुर्वेदिक चिकित्सक के लिए रोगी स्नेह और स्वागत का पात्र है। नहीं विश्वास हो तो दोनों जगह जाकर देख लीजिए। दुःख यह है कि कोरोना के विरुद्ध शासकीय अभियान डॉक्टरों के हाथ में है। आयुर्वेदिक चिकित्सक तो जिलों की सीमाओं पर खड़े आने वाले यात्रियों का स्क्रीन टेस्ट करते हैं–यह सच्चाई है। स्वाथ्य मंत्री महोदय! विचार करें! भेदभाव नहीं!

22. कोविड–१९ केंद्रों की दुर्दशा किसी से छुपी नहीं है। कभी मरीज टेबल से गिरकर मरता है, तो कभी स्नानघर में, कभी बिना ऑक्सीजन के मरता है तो कभी बिना चिकित्सा के! मधुमेह, हृदयरोग या दमा से पीड़ित लोगों को यदि कोविड–१९ केन्द्र ले जाया जाता है, तो उनके इन अतिरिक्त रोगों का कोई इलाज तो नहीं ही होता, बल्कि स्वयं कोरोना के लिए भी कोई दवाई नहीं दी जाती है। गर्म पानी की बोतल पकड़ा दी जाती है कि पीते रहो। पता नहीं सरकार द्वारा जो दवाइयां दी जाती है वें कहाँ जाती है। अव्यवस्थाओं को जब लोगों ने फिल्मांकितकर प्रसारित की तो रोगियों से मोबाइल ले लिए जाने लगे। अब जब मरीज दम तोड़ने लगे और घर वालों को कोई पता तक नहीं चला,तो अब दोबारा विभिन्न प्रतिबंधों के साथ मोबाइल की छूट मिलने लगी है, किंतु अव्यवस्था यथावत है। प्रतिरोगी दिया कितना धन कहाँ जाता है – जॉच का विशय है।

23. एक कोविड–सेण्टर में ५० मरीजों के लिए चार शौचालय व स्नानघर को उपयुक्त मानने वाले चिकित्सक एक घर में यदि ३ रोगी हो जाए तो उन तीनों के लिए अलग–अलग शौचालय व स्नानघर की व्यवस्था चाहते हैं। नहीं, तो कोविडकेन्द्र ले जाने की धमकी! क्यों?संभवतः सुधी पाठक जानते हैं।

कोरोना पार पाने का मार्गः

24. आज कोरोनावायरस के जीवन चक्र की अवधि पता है, विभिन्न माध्यमों में उसके जीवित रहने की अवधि पता है। अतः एक सुनिश्चित अवधि तक सख्त लॉकडाउन रखा जाए और उस अवधि में सामने आने वाले कोरोनावायरस के मामलों को दृढ़ निश्चय,

समर्पित शोध, वैकल्पिक चिकित्सा पर परीक्षण आधारित विश्वास और इनसे निकले सुनियोजित तरीके से निपटा जाए, तो आज भी इसे पराजित किया जा सकता है। अन्यथा जैसे आज भी डेंगू और चिकनगुनिया लोगों को पीड़ित कर रहे हैं वैसे ही इनसे कहीं अधिक घातक कोरोनावायरस असमर्थ और दीन लोगों की आंखें बंद करता रहेगा।यदि चीन ने इसी चालाकी से कोई भयंकर वायरस मात्र भारत में भेज दिया तो?तब वैश्विक महामारी न होने पर भारत के कर्णधार किसी सलाह, शोध और आविश्कार की बाट जोहेंगे?

कोरोना को कुबेर बनाने वालेः

सच्चेऔर प्रसारित उदाहरणों पर आधारितएक दृष्टि अब उनपर, जिनके लिए कहर कोरोना भी कुबेर बना हुआ है –

25. कोरोना संकट आते ही चालू ठेके को एकतरफा रोक मास्क की कीमत सात गुना करके बेचने वाले ठेकेदार और क्रय करने वाले अधिकारी किस श्रेणी में आते हैं?
26. मानवमात्र के लिए संकट बने कोरोना को गंभीरता से नश्ट करने उपलब्ध उपाय न कर, आयुर्वेद सहित वैकल्पिक चिकित्सा का विरोध कर अपुश्ट अंग्रेजी दवाएँ क्रय करने वाले अधिकारी किस श्रेणी में आते हैं? जबकि कोरोना से मौतें निरंतर हो रही है। अन्य रोग पाले लोग बिना कोरोना जीवित है, किन्तु कोरोना होने पर मर रहे हैं, इसलिए मूल कारणों में न जाकर उन रोगों को दोश देकर अपना पल्ला झाड़ने वाले अधिकारी किस श्रेणी में आते हैं?
27. लॉकडाउन में सामग्री के अधिकृत वाहनों को भी बिना घूस प्रवेश न देने और घूस लेकर अनधिकृत लोगों को वितरण प्रणाली में झौंकने वाले कोरोनायोद्धाओं के लिए तो हमने तालियाँ, थालियाँ, घंटे घड़ियाल और शंख नहीं बजाए थे।
28. लॉकडाउन में मिठाई की दुकानें बंद हो चुकी थीं अतः दूध तीस रूपये किलो था। अचानक दूध आना बंद हुआ। दूधवाले कोविडसेण्टर पहुँचाए गए। फिर दूध आया तो चालीस रुपये किलो था। फल तरकारियों के भी दाम बढ़े। कारण सुधी पाठक समझ जाएंगे।
29. स्पेन में लॉकडाउन में घर से निकलने पर ढाई लाख जुर्माना और यहाँ कुछ रुपयों में पड़ौसी जिले में जाओ। गुप्त मार्ग जानने और बनाने वाले गोतस्करों की सहायता से मरकज वाले विदेशी तक भारत में न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच कर छुप गए। मालवाहक वाहनों में निकल गए। किनकी सहायता से?
30. दीन हीनों के लिए अन्न, मुफ्त भोजन और आवास के लिए सरकार द्वारा जारी लाखों करोड़ कहाँ चला गया। दीन, हीन, गर्भवती, अबोध बालक सब जीवन की ओर पैदल प्रयाण कर मौत का ग्रास बन रहे थे।

    कोरोना मृतक के परिजन उनके संस्कार करने को तरसते रहे और कलक्टर साहब कोरोना पीड़ित अपनी माँ का शव ले जाते हैं। यदि सामर्थ्य से नियम भंग होते हैं तो धन की सामर्थ्य से क्या क्या नहीं हुआ होगा

31. विभिन्न व्यवस्थाएँ लागू करने के लिए सरकारों ने कलक्टर और पुलिस अधीक्षकों को जिम्मेवार ठहराया था। क्या है जो हजारों मृत्यु के बाद भी एक भी कलक्टर या पुलिस अधीक्षक जिम्मवार नहीं ठहराया गया। कारण जानना है तो इस संकटकाल में भी जनता की पीड़ा हरने के स्थान पर वाहनों और अन्य कारणों से धन इकट्ठा करने में जुटे प्रति चालान अतिरिक्त धन पाने वाले पुलिस कर्मी क्या संकेत करते हैं। पैसा ही सबकुछ है।

32. वेतन में कटौती हो गई! ठेकों में कटौती हुई? यदि हॉं तो धन किसलिए चाहिए! मितव्ययता के लिए आउटसोर्सिंग के सभी कार्य बंद कर सरकारी कर्मियों के द्वारा ही समस्त कार्य किए जांए। ठेकेदार पर भी तो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी कानून सहित सभी श्रम कानून लागू है। यदि फिर भी सरकारी अधिकारियों की अपेक्षा ठेकेदार कार्य कराने में अधिक सक्षम है तो अधिकारी किसलिए?वेतनभोगी कर्मचारी कमीशन नहीं देता इसलिए उनके पदों में कमी? नहीं तो असली कारण बताए। एक बात सरकार और जनता दोनों को समझनी चाहिए कि सरकार बनिया या व्यापारी या कॉर्पोरेट नहीं है, जो सभी कार्य और उपक्रम व्यापारियों के बेच दे और धन के लिए राश्ट्र के संसाधनों को बेच दे। लोककल्याण कौन करेगा। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा और सुरक्षा सबको देना लोकक़ल्याणकारी शासन का क़र्तव्य है। देश चलाने वाले धनी हो रहे हैं और देश गरीब– इन कुबेर बनाने वाले लोगों के कारण– जिनकी मानवता कोरोनाकाल में भी नहीं जगी।

33. पोस्टमार्टम के बाद बिना सुविधाशुल्क शव नहीं देने वाले और उनके विरुद्ध शिकायत पर भी कार्यवाही न कर नाममात्र की सुविधाशुल्क दिला देने वाले अधिकारियों की मानसिकता की कल्पना करें। क्या ये लोग मानव है?

34. कारोना काल में सार्वजनिक वितरण प्रणाली क विकेन्द्रित करने की आवश्कता सिह चढ़कर बोल रही है। ऐसी स्थिति में अनाज, शब्जियों के असीमित भण्डारण की छूट देने वाले लोग कौन है?

35. सैनिटाइज न हाने वाली खाद्य सामग्री के व्यापार की छूट। किन्तु सैनेटाइज हो जाने वाले स्वर्ण व रजत के कारोबारियों के व्यापार सहित अन्य कारोबार पर भी प्रतिबंध! कैसे समझ में आता है? कोई तर्क? कोई सिद्धान्त। कारोबारियों और पुलिस प्रशासन की बैठक के बाद कोई नई खोज या सिद्धान्त सामने आया हो तो बताओ जिसके कारण बाद में स्थानीय 'सामंजस्य' से व्यापार में छूट दी गई? 'सामंजस्य' से!

स्थान सीमित है! विराम आवश्यक। छत्तीस का ऑकड़ा नहीं चाहता। —कमल

प्रार्थनाविषय

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।।५४।। यजु. ३२।१५।।

व्याख्यानः- हे सर्वोत्कृष्टेश्वर ! आप "**वरुणः**" वर (वरणीय) आनन्दस्वरूप हो, स्वकृपा से मुझको "**मेधाम्**" मेधा सर्व-विद्यासम्पन्न बुद्धि दीजिए तथा "**अग्निः**" विज्ञानमय, विज्ञानप्रद "**प्रजापतिः**" सब संसार के अधिष्ठाता, पालक "**इन्द्रः**" परमैश्वर्यवान् "**वायुः**" विज्ञानवान्, अनन्तबल "**धाता**" तथा सब जगत् का धारण और पोषण करनेवाले आप "**मे मेधां ददातु**" मुझको अत्युत्तम मेधा (बुद्धि) दीजिए[१] "**स्वाहा**" इस प्रार्थना को आप प्रीति से स्वीकार कीजिए ।।५४।।

स्तुतिविषय

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।

मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।।५५।। यजु. ३२।१६।।

व्याख्यानः- हे महाविद्य ! महाराज ! सर्वेश्वर! "**मे ब्रह्म**" मेरा ब्रह्म (विद्वान्) और "**क्षत्रम्**" राजा महाचतुर, न्यायकारी शूरवीर राजादि क्षत्रिय-ये दोनों आपकी अनन्त कृपा से यथावत् अनुकूल हों । "**श्रियम्**" सर्वोत्तम विद्यादिलक्षणयुक्त महाराज्यश्री को हम प्राप्त हों । हे "**देवाः**" विद्वानो ! दिव्य ईश्वर गुण, परमकृपा आदि तथा उत्तम विद्यादिलक्षणसमन्वित श्री को मुझमें अचलता से धारण कराओ, उस श्री को मैं अत्यन्त प्रीति से स्वीकार करूँ और उस श्री को विद्यादि सद्गुण वा सर्वसंसार के हित के लिए तथा राज्यादि प्रबन्ध के लिए व्यय करूँ ।।५५।।

—आर्याभिविनय से

---

१ अनेक वार माँगना ईश्वर से अत्यन्त प्रीतिद्योतनार्थ और सद्यः दानार्थ है । बुद्धि से उत्तम पदार्थ कोई नहीं है। उसके होने से जीव को सब सुख होते हैं, इस हेतु से बारम्बार परमात्मा से बुद्धि की ही याचना करना श्रेष्ठ बात नहीं है । -महर्षि

वेद-वचन

महान् बनो

उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन् पृथिव्या अधि ।

सुमिती मीयमानो वर्चो धा यज्ञवाहसे ।। -ऋग्वेद ३।८।३ ।।

पदार्थ:-हे **(वर्ष्मन्)** श्रेष्ठ गुणों के प्रचारक ! **(वनस्पते)** सेवने योग्य धन के रक्षक विद्वन् ! आप **(पृथिव्याः)** भूमि के **(अधि)** ऊपर खम्भ के तुल्य **(उत् श्रयस्व)** ऊँचे हूजिए **(मीयमानः)** सत्कार किये हुए **(सुमिती)** सुन्दर बुद्धि से **(यज्ञवाहसे)** पढ़ने-पढ़ाने आदि यज्ञ को प्राप्त करनेहारे विद्यार्थी के लिए **(वर्चः)** पढ़नेरूप तेज को **(धाः)** धारण कीजिए ।

भावार्थ:-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है । जैसे बड़ आदि वनस्पति जड़, स्कन्ध, डाली आदि से बढ़ते हैं वैसे ही पुरुषार्थ के साथ विद्याओं का प्रचार कर मनुष्यों को बढ़ाना चाहिए ।

सबसे प्रेम

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳ राजसु नस्कृधि ।

रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ।। -यजुर्वेद १८।४८ ।।

पदार्थ:- हे जगदीश वा विद्वान् ! आप **(नः)** हम लोगों के **(ब्राह्मणेषु)** ब्रह्मवेत्ता विद्वानों में **(रुचा)** प्रीति से **(रुचम्)** प्रीति को **(धेहि)** धरो, स्थापना करो **(नः)** हम लोगों के **(राजसु)** राजपूत क्षत्रियों में प्रीति से **(रुचम्)** प्रीति को **(कृधि)** करो । **(विश्येषु)** प्रजाजनों में हुए वैश्यों में तथा **(शुद्रेषु)** शूद्रों में प्रीति से **(रुचम्)** प्रीति को और **(मयि)** मुझमें भी प्रीति से **(रुचम्)** प्रीति को **(धेहि)** स्थापित करो ।

भावार्थ:- इस मन्त्र में श्लेषालङ्कार है। जैसे परमेश्वर पक्षपात को छोड़ ब्राह्मणादि वर्णों में समान प्रीति करता है, वैसे ही विद्वान् लोग भी समान प्रीति करें । जो ईश्वर के गुण-कर्म और स्वभाव से विरूद्ध वर्त्तमान हैं, वे सब नीच और तिरस्कार करने योग्य होते हैं ।

प्रात:वेला

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।यथा चिन्नो अबोधय: सत्यश्रवसि
वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ।।४२१।।सामवेद १।४।८।३।।

<u>पदार्थ:-</u>(**सत्यश्रवसि**) जिसमें ठीक-ठाक श्रवण होता है वैसी, (**सुजाते**) जिसका जन्म शोभायुक्त है ऐसी (**अश्वसूनृते**) जिसमें प्रिय शब्द व्याप जाता है इस प्रकार की (**वाय्ये**) विस्तारवाली ! (**उष:**) प्रभात-वेला (**यथाचित्**) जिस प्रकार (**न:**) हमको (**अबोधय:**) पूर्व [समय में] जगाती रही है उसी प्रकार (**अद्य**) अब भी (**दिवित्मती**) प्रकाशवान् तू (**महे राये**) महाधनधान्य आदि के लिए योगसिद्धिरूप महान् ऐश्वर्य के लिए (**न:**) हमको (**बोधय**) जगा बोध प्रदान करती रह।

<u>भावार्थ:-</u> इसमें उषा की प्रशंसा के साथ-साथ परमात्मा का यह आदेश है कि जो लोग उषाकाल= प्रभातवेला में जागते हैं वे उद्यमी, कर्मण्य और धन-धान्य आदि ऐश्वर्यशाली होते हैं, और जो स्त्री उषा के समान गुण- कर्म-स्वभाववाली होती है, उसके घर में लक्ष्मी निवास करती है ।

आगे बढ़ो

उत् क्रामात: पुरुष माव पत्था, मृत्यो: पड्बीशमवमुञ्चमान: ।
मा च्छित्था अस्माल्लोमादग्ने: सूर्यस्य संदृश: ।।-अथर्ववेद ८।१।४

<u>पदार्थ:-</u>(**पुरुष**) हे पुरुष !(**अत:**) (**मृत्यो:**) इस मृत्यु, अज्ञान, निर्धनता आदि की (**पड्बीशम्**) बेड़ी को (**अवमुञ्चमान:**) तोड़ता हुआ (**मा अव पत्था:**) नीचे मत गिर (**अस्मात् लोकात्**) इस लोक- वर्तमान अवस्था से (**अग्ने:**) अग्नि, (शरीर, पुरुषार्थ और आत्मबल) से, और (**सूर्यस्य**) सूर्य के (**संदृश:**) दर्शन-नियम से (**मा च्छित्था:**) मत अलग हो ।

<u>भावार्थ:-</u> मनुष्य अपनी वर्तमान दारूण दशा से दृढतापूर्व ज्ञान और संपूर्ण पुरुषार्थ से निरंतर आगे बढ़ने के लिए नित्य पुरुषार्थ करे ।इस मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधारूप बेडियों को तोड़ डाले।

लेखकों से निवेदन

इस पत्रिका का उद्देश्य महर्षि मिशन को प्रचारित-प्रसारित करना है। आर्य जगत के चिंतकों और लेखकों से निवेदन है कि ऋषि मिशन की पूर्ति में सहयोग हेतु अपनी रचनाओं को प्रकाशनार्थ भिजवाएं । रचनाएँ महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के पते पर या sampadakmdsprakash@gmail.com **के पते पर ईमेल से भी भेजी जा सकती हैं ।**

—संपादक

राजा होते हुए भी अकेला

—डॉ. रामनाथ वेदोलंका

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्, एकोयासि सत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैः, वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते अस्मे। ऋग् १.१६५.३

ऋषिः मरुतः। देवता इन्द्रः। छन्दः त्रिष्टुप्।

• **(इन्द्र)** हे परब्रह्म परमात्मन्! **(त्व)** तू **(माहिनः सन्)** महान् होते हुए भी **(कुतः)** क्यों **(एकः)** अकेला **(यासि)** चलता है? **(सत्पते)** हे सत्पति! **(किं)** क्यों **(ते)**तेरा **(इत्था)** ऐसा [व्यवहार है]? [तू]**(समराणः)** [हमसे] मिलकर **(शुभानैः)** शोभन वचनों से **(सं पृच्छसे)** कुशलक्षेम पूछता है। **(हरिवः)** हे मनोहर गुणो वाले! **(यत्)** जो (ते) तेरा **(अस्मे)** हमारे प्रति [कर्तव्योपदेश है], **(तत्)** वह **(नः)** हमें **(वोचेः)** कह।

• संसार में हम देखते हैं कि जो जितना अधिक प्रतिष्ठित और महान् होता है, उतने ही अधिक कर्मचारी और सेवक उसके साथ विद्यमान रहते हैं। किसी राजा की जब सवारी निकलती है, तो अमात्य, परामर्शदाता, प्रधान अंगरक्षक, सुरक्षा-सैनिक आदि सैकड़ों लोग आगे पीछे चलते हैं। परन्तु हे परब्रह्म परमात्मन्! तुम विश्व के महान् चक्रवर्ती सम्राट् होते हुए भी एकाकी विचरते हो, इसमें क्या रहस्य है? क्या तुम्हें अंगरक्षकों और सहायकों की आवश्यकता नहीं है? क्या तुम्हें किसी का भय नहीं है? तुम जो अपने विश्व साम्राज्य के दौरे करते हो, व्यवस्था देखते हो, समुचित प्रबन्ध करते हो, वह सब तुम अकेले कैसे कर लेते हो; तुम भी प्रदर्शन के लिए ही सही, अपने साथ सैकड़ो अनुचरों को साथ लेकर क्यों नहीं चलते? नहीं, हम भूल करते हैं। तुम तो 'सत्पति' हो, श्रेष्ठ और विलक्षण रक्षक हो। जो दूसरों की रक्षा करने का सामर्थ्य रखता है, वह अपनी रक्षा के लिए पराश्रित क्यों होगा? तुम्हें किसी का भय नहीं है, कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। अतएव तुम शोभा के साथ एकाकी विचरते हो।

हे महेन्द्र ! तुम सम्राट् हो, हम तुम्हारी प्रजा हैं। तुम हमसे मिलकर प्यार भरे शुभवचनों से हमारा कुशल-क्षेम पूछते हो, हमारे सुख-दुःख का प्रतिवेदन सुनते हो, हमारे कर्मों एवं आचरणों को देखते हो, सत्कर्मो के लिए हमें उत्साहित करते हो, और जहाँ कहीं त्रुटि देखते हो उसके सुधार की प्रेरणा करते हो। तुम 'हरिवान्' हो, मनोहर गुणकर्मों वाले हो। हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमारे प्रति तुम्हारा जो कर्तव्योपदेश है उसे तुम हमें सदा कहते रहो। जब कभी हम कुराह पर चलने लगें, तब तुम मार्ग-दर्शक बनकर हमें कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर करते रहो। अन्यथा कुसंगति आदि में पड़कर हम मार्ग भ्रष्ट हो जायेंगे और न अपना कल्याण कर पायेंगे, न ही जग को कल्याण दे पायेंगे। हे राजा होते हुए भी अकेले रहने वाले देवाधिदेव! हम तुम्हारा ही आश्रय पकड़ना चाहते हैं, क्योंकि वे बड़े लोग भला हमें क्या सहारा दे सकेंगे जो स्वयं अपनी रक्षा के लिए परावलम्बी बने हुए हैं।

-वेदमञ्जरी से

दयानन्द कौन ?

(सृष्टि–सृजन–सत्य–प्रतिपादके–२)

(दयानंद कौन है?– के इस भाग के पूर्वाद्ध में गतांक में जगत् की विराटता दर्शाकर , इसकी उत्पत्ति के संबंध में महत्वपूर्ण मतों का परिचय देते हुए, आधुनिक वैज्ञानिक अवधारणाएं भी बताकर भौथ्तक साधनों व ज्ञान से सम्पन्न वैज्ञानिकों की अतीन्द्रीय ज्ञान के क्षेत्र में निरीहता बतायी गयी। उत्तरार्द्ध में आगे पढ़े निर्भ्रांत मार्ग)

वेद विरुद्ध मतों के मानने से सृष्टि के संचालक को मानव रूप में देखने के हमारे स्वभाव या चिंतन या मान्यता के कारण हम किसी निराकार के संचालक होने की कल्पना नहीं कर पा रहे!

किंतु हमारा यह महान् चिंतक उसी कर्त्ता की ओर इशारा करते हुए इस विषय में लिखे अपने अध्याय के आरंभ में ही पांच वेद मंत्र और उनका अर्थ देते हुए उस कर्त्ता को मानने की बात करता है। जैसे कुम्हार से घड़ा बनाने की प्रणाली समझ में आ सकती है। सुनार से गहने बनाने की प्रणाली समझ में आ सकती है।सृष्टि के कर्त्ता को भी जानकर उसकी कार्यप्रणाली को समझा जा सकता है। उस जानकारी से समझा जा सकता है जो सृष्टिकर्त्ता ने संग्रहित रूप में मानव मात्र को प्रदान की है। इसीलिए वह महान् चिंतक कर्त्ता को मानने की बात पाँच वेद मंत्रों से करता है जो निम्नांकित हैः –

"इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न।यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद।।१।।–ऋ० मं० १०। सू० १२६। मं० ७।।

तग आसीत्तमसा गूळमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।तुच्छ्येनाम्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम्।।२।।–ऋ० मं०। सू०। मं०।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भतूस्य जातः पतिरेक आसीत्।स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधमे।।३।।–ऋ०मं० १०। सू० १२६। मं० १।।

पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।४।। –यजुः अ० ३१। मं० २।।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति।यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति।।५।।–तैनिरीयोपनि०।

हे(अंग) मनुष्य! जिस से यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है जो धारण और प्रलयकर्त्ता है जो इस जगत् का स्वामी है। जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है सो परमात्मा है। उस को तू जान और दूसरे को सृष्टिकर्त्ता मत मान।।१।।

यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत्त, रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी आच्छादित था। पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप से कार्यरूप कर दिया।।२।।

हे मनुष्यों! जो सब सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का आधार और, जो यह जगत् हुआ है और होगा उस का एक अद्वितीय पति परमात्मा इस जगत् की उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान था। और जिस

ने पृथिवी से लेके सूर्य्यपर्यन्त जगत् को उत्पन्न किया है उस परमात्मा देव की प्रेम से भक्ति किया करें।।३।।

हे मनुष्यो! जो सब में पूर्ण पुरुष और जो नाश रहित कारण और जीव का स्वामी जो पृथिव्यादि जड़ और जीव से अतिरिक्त है, वही पुरुष इस सब भूत भविष्यत् और वर्तमानस्थ जगत् का बनाने वाला है।।४।।

जिस परमात्मा की रचना से ये सब पृथिव्यादि भूत उत्पन्न होते हैं, जिस से जीते और जिस में प्रलय को प्राप्त होते हैं, वह ब्रह्म है। उस के जानने की इच्छा करो।।५।।"
प्रश्नोत्तर रूप में इस सृष्टि अर्थात जगत् के तीन कारण उन्होंने बताए हैः —

"(प्रश्न) जगत् के कारण कितने होते हैं?

(उत्तर) तीन। एक निमित्त, दूसरा उपादान, तीसरा साधारण। **निमित्त कारण** उस को कहते हैं कि जिस के बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे। दूसरा **उपादान कारण** उस को कहते हैं जिस के विना कुछ न बने, वही अवस्थान्तर रूप होके बने बिगड़े भी। तीसरा **साधारण कारण** उस को कहते हैं कि जो बनाने में साधन और साधारण निमित्त हो। निमित्त कारण दो प्रकार के होते हैं। एक—सब सृष्टि को कारण से बनाने, धारने और प्रलय करने तथा सब की व्यवस्था रखने वाला **मुख्य निमित्त कारण परमात्मा**। दूसरा—परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्य्यान्तर बनाने बनाने वाला **साधारण निमित्त कारण जीव।** उपादान कारण—प्रकृति, परमाणु जिस को सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं। वह जड़ होने से आपसे आप न बन और न बिगड़ सकती है, किन्तु दूसरे के बनाने से बनती और बिगाड़ने से बिगड़ती है। कहीं—कहीं जड़ के निमित्त से जड़ भी बन और बिगड़ भी जाता है। जैसे परमेश्वर के रचित बीज पृथिवी में गिरने और जल पाने से वृक्षाकार हो जाते हैं और अग्नि आदि जड़ के संयोग से बिगड़ भी जाते हैं परन्तु इनका नियमपूर्वक बनना और वा बिगड़ना परमेश्वर और जीव के आधीन है।

जब कोई वस्तु बनाई जाती है तब जिन—जिन साधनों से अर्थात् ज्ञान, दर्शन, बल, हाथ और नाना प्रकार के साधन और दिशा, काल और आकाश साधारण कारण। जैसे घड़े को बनाने वाला कुम्हार निमित्त, मिट्टी उपादान और दण्ड चक्र आदि सामान्य निमित्त; दिशा, काल, आकाश, प्रकाश, आँख, हाथ, ज्ञान, क्रिया आदि निमित्त साधारण और निमित्त कारण भी होते हैं। इन तीन कारणों के विना कोई भी वस्तु नहीं बन सकती और न बिगड़ सकती है।"

इसी अध्याय में इन महान चिंतक ने वैदिक वाङ्मय के आधार पर सृष्टि रचना को तो समझाया ही है, साथ ही सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय विषयक इस अध्याय में निम्नांकित महत्वपूर्ण प्रश्नों/शंकाओं का उत्तर भी दिया हैः —

(प्रश्न) यह जगत् परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वा अन्य से? (प्रश्न) क्या प्रति परमेश्वर ने

उत्पन्न नहीं की? (प्रश्न) अनादि किसको कहते और कितने पदार्थ अनादि हैं? (प्रश्न) इसमें क्या प्रमाण है। (प्रश्न) जो यह जगत् है वह सब निश्चय करके ब्रह्म है। उस में दूसरे नाना प्रकार के पदार्थ कुछ भी नहीं किन्तु सब ब्रह्मरूप हैं। (प्रश्न) जगत् के कारण कितने होते हैं? (प्रश्न) नवीन वेदान्ती लोग केवल परमेश्वर ही को जगत् का अभिन्न निमित्तोपादान कारण मानते हैं– जो प्रथम न हो, अन्त में न रहै, वह वर्त्तमान में भी नहीं है। किन्तु सृष्टि की आदि में जगत् न था, ब्रह्म था। प्रलय के अन्त में संसार न रहेगा तो वर्तमान में सब जगत् ब्रह्म क्यों नहीं? (प्रश्न) जगत् के बनाने में परमेश्वर का क्या प्रयोजन है? (प्रश्न) बीज पहले है वा वृक्ष? (प्रश्न) जब परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है तो वह कारण और जीव को भी उत्पन्न कर सकता है। जो नहीं कर सकता तो सर्वशक्तिमान् भी नहीं रह सकता? (प्रश्न) ईश्वर साकार है वा निराकार ? जो निराकार है तो विना हाथ आदि साधनों के जगत् को न बना सकेगा और जो साकार है तो कोई दोष नहीं आता? (प्रश्ंन) जैसे मनुष्यादि के मां बाप साकार हैं उन का सन्तान भी साकार होता है। जो ये निराकार होते तो इनके लड़के भी निराकार होते। वैसे परमेश्वर निराकार हो तो उस का बनाया जगत् भी निराकार होना चाहिये। (प्रश्न) क्या कारण के विना परमेश्वर कार्य को नहीं कर सकता? (प्रश्न) जो कारण के विना कार्य नहीं होता तो कारण का कारण कौन है ? शंका: यहां नास्तिक लोग ऐसा कहते हैं कि १–शून्य ही एक पदार्थ है। सृष्टि के पूर्व शून्य था, अन्त में शून्य होगा क्योंकि जो भाव है अर्थात् वर्त्तमान पदार्थ है उस का अभाव होकर शून्य हो जायेगा। शंका:–'ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या और जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं।' (प्रश्न) सब की नित्यता भी अनित्य है जैसे अग्नि काष्ठों को नष्ट कर आप भी नष्ट हो जाता है। (प्रश्न) जैसे जागृत के पदार्थ स्वप्न और दोनों के सुषुप्ति में अनित्य हो जाते हैं वैसे जागृत के पदार्थों को भी स्वप्न के तुल्य मानना चाहिये। (प्रश्न) इस जगत् का कर्त्ता न था, न है और न होगा किन्तु अनादि काल से यह जैसा का वैसा बना है। न कभी इस की उत्पत्ति हुई, न कभी विनाश होगा। (प्रश्न) अनादि ईश्वर कोई नहीं किन्तु जो योगाभ्यास से अणिमादि ऐश्वर्य को प्राप्त होकर सर्वज्ञादि गुणयुक्त केवल ज्ञानी होता है वही जीव परमेश्वर कहाता है। (प्रश्न) कल्प कल्पान्तर में ईश्वर सृष्टि विलक्षण–विलक्षण बनाता है अथवा एक सी? (प्रश्न) सृष्टि–विषय में वेदादि शास्त्रों का अविरोध है वा विरोध? (प्रश्न) जब कारण के विना कार्य नहीं होता तो कारण का कारण क्यों नहीं? (प्रश्न) मनुष्य की सृष्टि प्रथम हुई या पृथिवी आदि की? (प्रश्न) सृष्टि की आदि में एक वा अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे वा क्या? (प्रश्न) आदि सृष्टि में मनुष्य आदि की बाल्य, युवा वा वृद्धावस्था में सृष्टि हुई थी अथवा तीनों में? (प्रश्न) कभी सृष्टि का प्रारम्भ है वा नहीं? (प्रश्न) ईश्वर ने किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्मय किन्हीं को सिहादि क्रूर जन्म किन्हीं को हरिण, गाय आदि पशु किन्हीं को वृक्षादि, कीट, पतंगादि जन्म दिये हैं। इस से परमात्मा में पक्षपात आता है। (प्रश्न) मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई? (प्रश्न) आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक? (प्रश्न) आर्यावर्त्त की

अवधि कहां तक है? (प्रश्न) प्रथम इस देश का नाम क्या था और इस में कौन बसते थे? (शंका) कोई कहते हैं कि ये लोग ईरान से आये। इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ है। इन के पूर्व यहाँ जंगली लोग बसते थे कि जिन को असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे और उन का जब संग्राम हुआ उसका नाम देवासुर संग्राम कथाओं में ठहराया। (प्रश्न) जगत् की उत्पत्ति में कितना समय व्यतीत हुआ? (प्रश्न) इस का धारण कौन करता है। कोई कहता है शेष अर्थात् सहस्र फण वाले सर्थ्प के शिर पर पृथिवी है। दूसरा कहता है कि बैल के सींग पर, तीसरा कहता है कि किसी पर नहीं, चौथा कहता है कि वायु के आधार, पाँचवां कहता है सूर्य के आकर्षण से खैंची हुई अपने ठिकाने पर स्थित, छठा कहता है कि पृथिवी भारी होने से नीचे–नीचे आकाश में चली जाती है इत्यादि में किस बात को सत्य मानें? (प्रश्न) इतने–इतने बड़े भूगोलों को परमेश्वर कैसे धारण कर सकता होगा? (प्रश्न) पृथिव्यादि लोक घूमते हैं वा स्थिर? (प्रश्न) सूर्य चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं? (प्रश्न) जैसे इस देश में मनुष्यादि सृष्टि के आकृति अवयव हैं वैसे ही अन्य लोकों में होगी वा विपरीत? (प्रश्न) जिन वेदों का इस लोक में प्रकाश है उन्हीं का उन लोकों में भी प्रकाश है वा नहीं? (प्रश्न) जब ये जीव और प्रकृतिस्थ तत्त्व अनादि और ईश्वर के बनाये नहीं हैं तो ईश्वर का अधिकार भी इन पर न होना चाहिये, क्योंकि सब स्वतन्त्र हुए?

इन प्रश्नों के उत्तर यदि इस लेख में दिए जाते तो अत्यधिक विस्तार हो जाता

इस चिंतक ने न केवल इन प्रश्नों का निर्भ्रांत उत्तर दिया है वरन् ऊपर वर्णित पौराणिक और नास्तिक मतों की सृष्टि तथा प्रलय संबंधी मान्यताओं का खंडन भी इसी अध्याय और इसी पुस्तक के अन्य अध्यायों में सप्रमाण किया है।

ऐसे लोग विरले होते हैं जो मानव जीवन सहित सृष्टि के सभी आयाम पर चिंतन करते हुए अपने निर्भ्रांत विचार लोगों के सम्मुख रखते हैं।

भ्रांत मत संप्रदायों के ग्रंथों और उपदेशों के द्वारा भ्रमित किए जा रहे और अतींद्रिय तथ्यों का अवलोकन नहीं कर पा रहे असहाय वैज्ञानिकों द्वारा दिए जा रहे अधूरे सिद्धांतों के इस भ्रममय वातावरण में निर्भय और निश्चयात्मक सिद्धांतों को पुनः प्रस्तुत करने वाले ये महान् चिंतक ही है आर्य समाज के संस्थापक **महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती** और इस लेख में जो उपर्युक्त उद्धरण दिए गए हैं वे उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास से लिए गए हैं। इसी ग्रन्थ के ११वें से १४वें समुल्लास में भी वेद विरोधी देशी और विदेशी संप्रदायों में अन्य विषयों के अलावा सृष्टि रचना के विषय में भी जो भ्रांतियां हैं– उनका निवारण किया गया है। साथ ही इन **महान् महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती** के **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** नामक ग्रंथ के 'सृष्टिविद्याविषयः','पृथिव्यादिलोकभ्रमणविषयः', 'आकर्षणानुकर्षण विषयः''प्रकाश्यप्रकाशकविषयः' नामक अध्यायों में भी सृष्टि रचना पर प्रभूत विचार किया गया है–जो पढ़ने योग्य है। उपर्युक्त प्रश्नमात्र यहाँ अंकित करने का

उद्देश्य यही है कि पाठकवृंद में जिज्ञासा उत्पन्न हो और वे महर्षि दयानंद के ग्रंथों को पढ़ने में प्रवृत्त हों। इस लेख में प्रकरण से संबंधित **सत्यार्थप्रकाश** एवं **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** को पढ़ने का सब से सादर अनुरोध है।आपको निराशा नहीं होगी।

प्रत्येक तथ्य को प्रत्यक्ष देखकर और इंद्रियों से अनुभूत करके ही माननेवाले वैज्ञानिकों द्वारा अर्जित ज्ञान का महर्षि ने कहीं भी विरोध नहीं किया है। किन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि हमारे परिवेश में हमारे अस्तित्व सहित बहुत कुछ है, जो अतीन्द्रियता का सहारा लिए बिना समझ से परे होता है। धरा और अंतरिक्ष में भी स्थापित विराट् खगोलीय यंत्रों से अवलोकन कर अपने यंत्रों पर उन्हें मापकर सिद्धान्त बनाने वाले वैज्ञानिक, जिनको विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार नोबल पुरस्कार प्राप्त होता है, वे भी अपने को एक भारतीय चिंतक, अध्येता द्वारा पूछे प्रश्न का उत्तर देने में वर्षों तक असहाय पाते हैं। आर्यसमाजी वैज्ञानिक श्रद्धेय आचार्यश्री अग्निव्रतजी नैष्ठिक ने ऐतरेय ब्राह्मण का भाष्य करते हुए 'वेदविज्ञान आलोक' नामी ग्रंथ की रचना की है जिसका डंका विश्वभर में, यहाँ तक कि 'नासा' तक भी बजा है। आधुनिक खगोल वैज्ञानिकों के कई सिद्धान्तों पर आचार्यश्री के प्रश्नों का जवाब वैज्ञानिकों के पास नहीं है। यहाँ तक कि गुरुत्वाकर्षण पर नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक इसी खोज पर आचार्यश्री के प्रश्नों के जवाब में लिखते हैं कि वे एक वर्ष तक प्रश्नों का जवाब देने की स्थिति में नहीं है। जबकि आचार्यश्री तैयार है अपने वैदिक रश्मि सिद्धान्त के आधार पर आधुनिक विज्ञान के अनसुलझे रहस्यों को सुलझाने के लिए।

इस प्रकरण का उल्लेख यहाँ करने का उद्‌देश्य आधुनिक विज्ञान की उपेक्षा या निन्दा करना कतई नहीं है। बल्कि जो आधुनिक विज्ञान और वैज्ञानिक अथाह धन खर्च करके, विराट उपकरणों की उपस्थिति में, हजारों वैज्ञानिकों की बुद्धि एक साथ मिलकर भी अपने बनाए घेरों में स्वयं को असहाय पाते हैं। उनको उनके घेरे से निकालकर वेद और वैदिक वाङ्मय का अथाह आकाश प्रदान करना ही उद्‌देश्य है, जिसमें उड़ान भर वे विज्ञान को अतीन्द्रिय दर्शन द्वारा अर्जित जानकारी के साथ मिलाकर सत्य को उद्‌घाटित कर सकें।

परमात्मा प्रदत्त और ऋषियों द्वारा उद्‌घाटित इस ज्ञान के स्रोत को पुनः महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विश्व के समक्ष रखा और उनके एक सिपाही आचार्यश्री ने मात्र एक ग्रंथ के आधार पर विश्व के वैज्ञानिकों को निरुत्तर किया है, वह ज्ञान अपना महत्त्व प्राप्त करे और विश्व उससे लाभान्वित हो। **समन्वय हो इन्द्रियानुभूत और अतीन्द्रिय ज्ञान का! चाहे भारत में ही चाहे विश्व भर में!**

—कमल

।। ओ३म् ।।

स्वाध्याय

अथऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेदविषयविचारः—१—डॉ० रामनारायणजी शास्त्री

पहले तीन प्रकरणों में ईश्वर प्रार्थना, वेदोत्पत्ति और वेदों की नित्यता पर विचार विमर्श करने के बाद अपने दार्शनिक ग्रंथ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में महर्षि स्वामी दयानंद जी महाराज क्रम प्राप्त चतुर्थ प्रकरण में "वेदों में किस विषय वस्तु का वर्णन है" इस तथ्य पर विचार कर रहे हैं।

"संपूर्ण ज्ञान विज्ञान के आकर ग्रंथ है वेद" इस तथ्य को सृष्टि के प्रारंभ से अद्य पर्यंत सभी ऋषि मुनि और आचार्य अपने-अपने ढंग से अपनी अपनी भाषा में कहते और लिखते रहे हैं। महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने वेद और ब्रह्म (ईश्वर) का तादात्म्य संबंध मानकर वेद को धाम, चक्षु, बल और ब्रह्म कहा है—

वेदा में परमं चक्षुः, वेदा में परमं बलम् ।।
वेदा में परमं धामं, वेदा में ब्रह्म चोत्तमं ।।

राजर्षि मनु महाराज ने संपूर्ण वेद को धर्म का मूल तथा सर्व ज्ञान युक्त कहा और यह भी कहा कि सबकुछ वेद से प्रसिद्ध होते हैं।**"वेदोऽखिलो धर्म मूलम् सर्वज्ञानमयो हि सा""सर्व वेदात् प्रसिद्ध्यति"**आधुनिक युग के अग्रणी वेदभाष्यकार, राष्ट्रचेतना के अग्रदूत ऋषिवर स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेद को सब सत्य विद्याओं का भंडार कहा है—**"वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है"** साथ ही सब सत्य विद्याओं का मूल परमेश्वर को बताकर वेद का मुख्य विषय ईश्वर ही बताया है —**"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।"** इस प्रकार मनुष्य के लिए ज्ञातव्य और कर्तव्य जो कुछ भी है वह सब विज्ञान अर्थात वेद का विषय है। इस "वेदविषयविचार" में महर्षिजी ने वेदों.की विषय वस्तु को विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान के रूप में चार भागों में विभक्त किया है।

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'नामक अपने दार्शनिक ग्रंथ में महर्षि जी ने ५७ (सत्तावन) प्रकरणों में वेद विषय पर ही अपने और अपने से पूर्ववर्ती ऋषियों के विचार को ही अभिव्यक्त किया है। विज्ञान शब्द के विषय में एक तथ्य निवेदन कर हम ऋषि के शब्दों को यथावत् आपके समक्ष स्वाध्याय के लिए प्रस्तुत करेंगे। विज्ञान शब्द के तीन अर्थ है। (१) विपरीतं ज्ञानम् विज्ञानं = उल्टाज्ञान = मिथ्याज्ञान विज्ञान है। प्रायः यह दृष्टिपथ पर आता है कि लोग विपरीत अथवा अहितकर ज्ञान को ही विज्ञान समझे हुए हैं। (२) विविधम् ज्ञानम् विज्ञानं। अनेक प्रकार का ज्ञान विज्ञान है, जैसा कि इसी ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ५७ प्रकरण ज्ञान विज्ञान के हैं— यह विविध ज्ञान का एक उदाहरण है। प्रायः विश्वविद्यालयों तथा तथा संबद्ध महाविद्यालयों में जो अनेक विधाएं पढ़ाई जा रही है, जैसे गणित, भौतिकशास्त्र, प्राणिशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, भूगोल शास्त्र,खगोल (ज्योतिषशास्त्र), राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र आदि यह विविध ज्ञान = विज्ञान का दूसरा उदाहरण है। (३) विशिष्ट ज्ञानम् = विज्ञानं। विशेष ज्ञान या विशेष प्रकार का ज्ञान विज्ञान है। यहॉ 'विशिष्ट ज्ञान का अर्थ आत्मज्ञान

अर्थात् आत्मा और परमात्मा का ज्ञान है और यही महर्षि को यहाँ विज्ञान के शब्दार्थ के रूप में अभिप्रेत है, जैसा कि प्रारंभ मे वे लिख रहे हैं– "तत्रादिमोविज्ञानविषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योऽस्ति। तस्य परमेश्वरादारभ्य तृणपर्यन्तपदार्थेषु साक्षाद् बोधन्वयत्वात्। तत्रापीश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति। कुतः?अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्यखलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधनत्वात्।" इसके अतिरिक्त यह भी एक प्रामाणिक तथ्य है कि ईश्वर को जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता तथा किसी का भी भय नहीं रहता; यहाँ तक कि मृत्यु का भी भ्य नहीं रहता–"तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यातेऽयनाय।।

अब हम महाराज की भाषा को यथावत् आपके समक्ष उपस्थापित कर रहे हैं–

"अत्र चत्वारो वेदविषयाः सन्ति, विज्ञानकर्मोपासनाज्ञानकाण्डभेदात्। "तत्रादिमोविज्ञानविषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योऽस्ति। तस्य परमेश्वरादारभ्य तृणपर्यन्तपदार्थेषु साक्षाद् बोधन्वयत्वात्। तत्रापीश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति। कुतः?अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्यखलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधनत्वात्। अत्र प्रमाणानि–

'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।।' कठोपनिशत् वल्ली २। मंत्र१५।।

'तस्य वाचकः प्रणवः।।' योगशास्त्रे अ०१। पा०१। सू०२७।।

'ओ३म् खं ब्रह्म ।।' यजुः० अ०४०।।

'ओमिति ब्रह्म ।।' तैत्तिरीयारण्यके । प्र०७। अनु०८।।

'तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।।१।।

यत्तददृश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तदपाणिपादं नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः ।।२।।' मुण्डके१। खण्ड १ । मंत्र ५–६।।

एषामर्थः–(सर्वे वेदाः) यत्परमं पदं मोक्षाख्यं परब्रह्मप्राप्तिलक्षणं सर्वानन्दमयं सर्वदुःखेतरदस्ति तदेवौङ्कारवाच्यमस्ति। (तस्य०) तस्येश्वरस्य प्रणव ओङ्कारो वाचकोऽस्ति वाच्यश्चेश्वरः। (ओम्०) ओमिति परमेश्वरस्य नामास्ति, तदेव परं ब्रह्म सर्वे वेदाआमनन्ति आसमन्तादभ्यस्यन्ति मुख्यतया प्रतिपादयन्ति, (तपांसि०) सत्यधर्मानुष्ठानानितपांस्यपि तदभ्यासपराण्येव सन्ति, (यदिच्छन्तो०) ब्रह्मचर्यग्रहणमुपलक्षणार्थं, ब्रह्मचर्य्यगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाश्रमाचरणानि सर्वाणि तदेवामनन्ति ब्रह्मप्राप्त्यभ्यासपराणि सन्ति। यद् ब्रह्मेच्छन्तोविद्वांसस्तस्मिन्न ध्यासमाना वदन्त्युपदिशन्ति च। हे नचिकेतः ! अहं यमो यदीदृशं पदमस्ति तदेतत्ते तुभ्यं संग्रहेण संक्षेपेण ब्रवीमि।। न।।

(तत्रापरा०) वेदेषु द्वे विद्ये वर्त्तेते अपरा परा चेति। तत्र यया पृथिवीतृणमारभ्य प्रकृतिपर्यन्तानां पदार्थानां ज्ञानेन यथावदुपकारग्रहणं क्रियते सा अपरोच्यते। यया चादृश्यादिविशेषणयुक्तं सर्वशक्तिमद् ब्रह्म विज्ञायते सा पराऽर्थादपरायाः सकाशादत्युत्कृष्टास्तीति वेद्यम्।

भाषार्थ–अब वेदों के नित्यत्त्वविचार के उपरान्त वेदों में कौन कौन विषय किस किस

प्रकार के हैं, इसका विचार किया जाता है। वेदों में अवयवरूप विषय तो अनेक हैं, परन्तु उनमें से चार मुख्य हैं–(१) एक विज्ञान अर्थात् सब पदार्थोंत्र को यथार्थ जानना, (२) दूसरा कर्म, (३) तीसराउपासना, और (४) चौथा ज्ञान है। 'विज्ञान' उसको कहते हैं कि जो कर्म, उपासना और ज्ञान इनतीनों से यथावत् उपयोग लेना, और परमेश्वर से लेके तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षाद् बोध का होना, उनसे यथावत् उपयोग का करना, इससे यह विषय इन चारों में भी प्रधान है, **क्योंकि इसी में वेदों का मुख्य तात्पर्य है।** सो भी दो प्रकार का है–एक तो परमेश्वर का यथावत् ज्ञान औरउसकी आज्ञा का बराबर पालन करना, और दूसरा यह है कि उसके रचे हुए सब पदार्थोंके गुणोंको यथावत् विचार के उनसे कार्य सिद्ध करना, अर्थात् ईश्वर ने कौन कौन पदार्थ किस किसप्रयोजन के लिए रचे हैं। और इन दोनों में से भी ईश्वर का जो प्रतिपादन है सो ही प्रधान है।

इसमें आगे कठवल्ली आदि के प्रमाण लिखते हैं–(सर्वे वेदाः०)परमपद अर्थात् जिसका नाम मोक्ष है, जिसमें परब्रह्मको प्राप्त होके सदा सुख में ही रहना, जो सब आनन्दों से युक्त सब दुःखों से रहित और सर्वशक्तिमान् परब्रह्म है, जिसके नाम (ओम्) आदि हैं, उसी में सब वेदों का मुख्य तात्पर्य है। इसमें योगसूत्र का भी प्रमाण है– (तस्य०) परमेश्वर का ही ओङ्कार नाम है। (ओं खं०) तथा (ओमिति०) ओं और खं ये दोनों ब्रह्मके नाम हैं और उसी की प्राप्ति कराने में सब वेद प्रवृत्तहो रहे हैं, उसकी प्राप्ति के आगे किसी पदार्थ की प्राप्ति उत्तम नहीं है, क्योंकि जगत् का वर्णन,दृष्टान्त और उपयोगादि का करना ये सब परब्रह्म को ही प्रकाशित करते हैं तथा सत्यधर्म के **अनुष्ठान, जिनको तप कहते हैं, वे भी परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिए हैं,** तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के सत्याचरणरूप जो कर्म हैं वे भी परमेश्वर की ही प्राप्तिकराने के लिए हैं, जिस ब्रह्म की प्राप्ति की इच्छा करके विद्वान् लोग प्रयत्न और उसी का उपदेशभी करते हैं । नचिकेता और यम इन दोनों का परस्पर यह संवाद है कि हे नचिकेतः! जो अवश्य प्राप्ति करने योग्य परब्रह्म है, उसी का मैं तेरे लिए संक्षेप से उपदेश करता हूं। और यहाँ यह भी जानना उचित है कि अलङ्काररूप कथा से नचिकेता नाम से जीव और यम से **अन्तर्यामी परमात्मा को समझना चाहिए।**

(तत्रापरा०) वेदों में दो विद्या हैं–एक अपरा, दूसरी परा। इनमें से अपरा यह है कि जिससेपृथिवी और तृण से लेके प्रकृतिपर्यन्त पदार्थोंके गुणों के ज्ञान से ठीक ठीक कार्य सिद्ध करनाहोता है और दूसरी परा कि जिससे सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है । यह परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है क्योंकि अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या है।

यजुर्वेद और ईशोपनिषद् में अपरा और परा विद्या को अविद्या और विद्या के नाम से वर्णित किया है। अविद्या से मृत्यु को पार किया जाता है अथवा जीता जाता है और विद्या के द्वारा अमृत का, परमपद को, ब्रह्म को, मोक्ष को प्राप्त किया जाता है। **(क्रमशः)**

पाँचवाँ भाग, पाँचवाँ अध्याय

चौमुखा विकास

वह आर्यसमाज का यौवनकाल था। संस्था की धमनियों में नया रक्त बह रहा था। पंजाब और पश्चिमोत्तर प्रदेश में प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना हो गई। प्रतिनिधि सभा की स्थापना का अभिप्राय यह होता था कि प्रान्त में समाज के विचार और शिक्षा के कार्य का एक प्रबल केन्द्र बन गया। केन्द्रके स्थापित हो जाने पर उसके चारों और व्याख्यान, शास्त्रार्थ, वार्षिकोत्सव,.कन्या पाठशाला, स्कूल आदि का प्रवाह होने लगता था। प्रत्येक कार्य में उत्साह था और जीवन था। यदि हम सब प्रान्तों और उसकी सब समाजो के कार्यों का विस्तार से वर्णन करें तो पूरा महाभारत बन जायेगा। इसलिए हम कुछ चुने हुए दृष्टान्त उपस्थित करके पाठकों को उस समय के उमंगपूर्ण जीवन की झांकी दिखा कर ही सन्तोष करेंगे।

आर्यसमाज मेरठ के नवें वार्षिकोत्सव का वृत्तान्त हम 'आर्य समाचार' मेरठ से उद्धृत करते हैं:-

"कोटानुकोट धन्यवाद है उस परमेश्वर सर्वशक्तिमान्, परमदयालु परमात्मा का कि जिसकी कृपालुता और दयालुता से कायम हुए ९ वर्ष कुशलपूर्वक व्यतीत हो गये। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सालगिरह मनाने के लिए २६ व २७ दिसम्बर १८८७ ई. को वार्षिकोत्सव यानि जन्मोत्सव मनाया गया। शहर और कैन्ट में विज्ञापन प्रकाशित किये गये थे और बाहर के समाजों को भी निमन्त्रण भेजे गये थे। २५ दिसम्बर ८७ से सज्जन धर्मात्मा परोपकारी आर्यपुरुषों की आमद शुरु हुई और रेलवे स्टेशन पर उनका स्वागत किया गया। जिन-जिन भद्रपुरुषों ने पधार कर रौनक बख्शी, उनके नाम ये है:-

"मु. गोमती प्रसाद साहब, सेक्रेटरी आर्यसमाज चकरौता से; ला॰ मुसद्दी लाल व पं॰ शंकरलाल साहब, आर्यसमाज खरड़, जिला मुजफ्फरनगर से; लाला गंगासहाय साहब व ला॰ रामदास साहब, बछरावन जिला मुरादाबाद से; पं॰ रघुनाथदास साहब, उपमन्त्री आर्यसमाज शिमला से; चौ॰ खुशहालसिंह साहब, मंत्री व चौ. बुधसिंह साहब व बाबू बिहारी लाल साहब, मुजफ्फरनगर से; ला॰ बंशीलाल साहब व पं॰ दिलीपसिंह साहब व पं॰ जगन्नाथ साहब व मुन्शी प्यारेलाल साहब व डॉक्टर दीनामल साहब व पं॰ भगवान दास साहब, देहली से; ला॰ हरदयाल सिंह साहब, पुस्तकाध्यक्ष मुल्तान से; ला॰ सुन्दरलाल साहब, ला॰ दौलत राम साहब, मा॰ कूडामल साहब और ला॰ बुधसिंह साहब ओवरसियर, सहारनुपर से; बा॰ गोपीचन्द साहब मन्त्री, ला॰ शालिग्राम साहब, ला॰ कालीचरण साहब,

पुस्तकाध्यक्ष, ला० नत्थूलाल साहब तथा ला० छोटूमल साहब, समाज सदस्य, कालका से; **पं० गुरुदत्त साहब, लाहौर से**; चौधरी चन्दन सिंह साहब, चौ० भरतसिंह साहब, और चौ० फतहसिंह साहब, ढकोली, जिला मेरठ से; ला० घासीराम साहब, ला० शंकरलाल साहब, ला० मथुरादास साहब, मंत्री, ला० नत्थूलाल साहब, ला० शिवदयाल सिंह साहब, ला० जगन्नाथप्रसाद साहब, ला० उमरावसिंह साहब, ला० प्यारेलाल साहब और ला० बांकेराम साहब, आर्यसमाज, गाजियाबाद (मेरठ) से; मुन्शी बेनीप्रसाद साहब, लाला किशोरीलाल साहब, मुन्शी गोपालसहाय साहब, मुन्शी रतीराम साहब, आर्यसमाज जलालाबाद जिला मेरठ से; पंडित दिलीपसिंह साहब, गोविन्दपुरी से; पं. जुगलकिशोर साहब, मौजा पूँठ से; ला० गनेशी लाल साहब और ला० रामचन्द्र साहब, बेगमाबाद, जिला मेरठ से; चौ० हंसराज साहब, वसोखा से; ला० घासीराम साहब, ला० फकीरचन्द साहब व ला० हजारीलाल साहब, पुस्तकाध्यक्ष, ला० देवीसहाय साहब, ला० बालमुकुन्द साहब, ला०छज्जू सिंह साहब, पं० झब्बन लाल साहब व ला० गंगा सहाय साहब आर्यसमाज परिक्षितगढ़ जिला मेरठ से।

"समाज का मकान बन्दनवारों से, फर्शपरोश वगैरह से खूब सजाया गया था। २६ दिसम्बर सन् ८७ को ८ बजे सुबह से हवन शुरु हुआ और दस बजे समाप्त हुआ। खुशबूदार आहुतियों की लपट यज्ञमण्डप को ताजगी देती थी। हवन समाप्त होने के पश्चात् पं. शिवप्रसाद साहब अध्यापक, आर्यसमाज मेरठ ने हवन के लाभ बहुत सुन्दरता से बयान किये....... !

"इसके बाद ऐंग्लो वैदिक स्कूल, आर्यसमाज मेरठ के छात्रों ने वेदमंत्र पढ़े और एक लड़की ने स्त्री-शिक्षा पर एक भाषण दिया जो एक कुमारी कन्या की बारीक और मीठी आवाज से बहुत मनोहर मालूम होता था। यह कन्या पाठशाला डॉक्टर रामचन्द्र साहब असिस्टैण्ट सेक्रेटरी आर्यसमाज, मेरठ की परोपकार-निष्ठा और सच्ची देशहितैषिता से उन्हीं के मकान पर कुछ दिनों से स्थापित है और इसका कुल खर्च, किताब व स्लेट व पैंसिल व कलम व रोशनाई आदि का डॉक्टर साहब ही अपनी जेब से खर्च करते हैं और उनकी धर्मपत्नी लड़कियों को पढ़ाती हैं । ये सब लड़कियां आठ-नौ वर्ष से ज्यादा उमर की नहीं, बल्कि कुछ तो सात साल तक की हैं ।.....

''तीन बजे से लैक्चरों का समय था । दो बजे से मेहमानों और सभासदों के अतिरिक्त शहर और छावनी के बहुत-से सज्जन उत्सव-मण्डप में आने लगे, जिससे कि समाज मन्दिर जो एक बड़ा आलीशान मकान है सब भर गया । नियत समय पर परमात्मा की प्रार्थना उपासना के पश्चात् कालका समाज की भजन मण्डली ने भजन गाये । फिर पहले बाबू अयोध्या प्रसाद साहब मैम्बर वैश्य उन्नति सभा, मेरठ ने स्त्री-शिक्षा पर एक अत्यन्त प्रभावशाली व्याख्यान देकर यह सिद्ध कर दिया कि स्त्रियों

की शिक्षा के बिना हमारे देश का सुधार नहीं हो सकता । इसके पश्चात् जनाब पं. गुरुदत्त साहब एम. ए. ने आर्यसमाज के असूल की खूबी और उसके अनुसार पूरा-पूरा आचरण करने से मनुष्य को जो लाभ पहुंचा सकते हैं उनका वर्णन जिस खूबी और सच्चे जोश-खरोश मुल्की व कौमी हमदर्दी के साथ किया, उसका ठीक-ठीक चित्र खींचना हमारी जिव्हा और लेखनी की शक्ति से बाहर है । उसकी खूबी वही लोग समझ सकते हैं जिन्होंने उसको सुना है । पं. गुरुदत्त साहब एक बहुत बड़े जबरदस्त लायक-फायक और मशहूर लैक्चरार हैं । अगर ऐसे पुरजोर लैक्चरार मुल्क व कौम के सच्चे खैरख्वाह दस-पांच और भी हों तो आर्यावर्त की काया आनन-फानन में पलट जाये।....यह व्याख्यान ऐसा प्रभावशाली था कि ला. मुसद्दी लाल साहब मैम्बर आर्यसमाज खरड, जिला मुजरफ्फरनगर ने उसकी तौसीफ उसी वक्त बयान की और पंडित जी महाराज के चरण छूकर अपनी श्रद्धा प्रकट की । इस लैक्चर के पश्चात् मुन्शी प्यारेलाल साहब आर्यसमाज, दिल्ली ने एक भजन ऐसी सुन्दरता से गाया कि जिसे सुन कर श्रोता दंग हो गए.... ।

'' २७ दिसम्बर क० प्रातःकाल आर्यसमाज , मेरठ के सदस्यों ने बाहर आये हुए कुछ सदस्यों से भेंट की। उस समय जो सच्चे प्रेम और मुहब्बत का इजहार होता था, आर्य भाइयों में ऐसा स्वाभाविक दिली प्रेम पाया जाता था जो भाइयों को हुआ करता है और परस्पर एकता का छोटा-सा नमूना हैं और क्यों न हो जब विचार और विश्वास एक से हों तो परस्पर मेल न होने का कोई कारण दिखाई नहीं देता।..... इसके पश्चात् स्वामी ईश्वरानन्द जी महाराज ने सामवेद के मन्त्रों का गायन साज के साथ किया जिसे सुनकर श्रोता बहुत ही खुश हुए। सचमुच स्वामी जी महाराज ने इस फन में बड़ी योग्यता प्राप्त की है।..........''

मेरठ समाज के नवें वार्षिकोत्सव का लगभग पूरा वृत्तान्त देने से मेरा अभिप्राय यह दिखाना है कि उस समय के आर्यसमाजियों में नवयौवन का सा उत्साह और आशावाद था। मैंने उत्सव वृत्तान्त की भाषा में शाब्दिक परिवर्तन किये हैं, वे केवल पाठकों की सुविधा के लिए। भाषा की उमंग को जैसा-का-तैसा रहने दिया। सारे वर्णन में परस्पर प्रेम, धार्मिक भावना और प्रत्येक अच्छी वस्तु की दिल खोलकर प्रशंसा करने की प्रवृत्ति दिखाई देती हैं। उस समय के आर्य समाचारपत्रों में अन्य बड़े-बड़े वार्षिकोत्सवों के जो वृत्तान्त मिलते हैं वे भी लगभग इसी उत्साह और आशावाद से पूर्ण हैं। (क्रमशः)

गतांक में हमारे योद्धा महर्षि फर्रुखाबादव श्रृंगिरामपुर में धर्मप्रचार, शास्त्रार्थ, पौराणिकों की असफल उद्दण्डता, नदी में स्नान के समय मगरमच्छ का आगमन आदि वर्णन किए गए थे। इस अंक में पढ़े कोलकाता की विशेषताएँ, यहाँ महर्षि का आगमन, धर्मप्रचार, बंगाल के प्रसिद्ध विद्वानों से वार्ता लॉर्ड नार्थबुक के ताने का समुचित उत्तर और महर्षि के आगमन से धन्य होती बंगभूमि की चर्चा-सं.

ऋषिगाथा

ऊँची, विशाल, गुरु भवनपंक्ति, कर रही गगन से मन विनोद
अवसर पर रस सिंचन कर जाते, इठलाते मधुमय पयोद।।
विस्तृत बाजारों में क्रय-विक्रय, नृतय ताल देतीं जी भर।
ग्राहक गुन गुन व्यापार करें, भर कर इच्छाओं से अंतर।।
देखो:- वैभव का गमन आगमन, रिक्त हाथ-पूरी झोली।
देखो: मानव के विविध रूप, कितने इंगित कितनी बोली।।
देखो, देखो देखो इनके- अर्जन से अधिक विसर्जन को।
देखो:- दोनों ही थके हुए, पर पुलकित हर्षाये मन को।।
आदान, दान, अर्जन, विसर्जन, ही जीवन, युग संघर्षण।
पथ पर बढ़ते जाना चलते जाना, ही वीरों का जीवन।।१८।।
बहता जता मानव प्रवाह, संभार बङ्ग धरणी का ले।
बढ़ता जाता मानव प्रवाह, पीकर पद पद आशा प्याले।।
प्रिय कलापूर्ण मंथर गति से पदचाप बंग बालाओं के।
होते जाते; श्रृङ्गार किये शिर, मृदुल पुरुष मालाओं के।।
मेवाडी वणिक, मारवाड़ी, व्यापारी मर्यादा लेकर।
बढ़ रहा प्रगति पथ पर प्रयाण करता, वैभव मुदिता मन भर।।
अल्हड़ता पंचनदीयों की उत्तर प्रदेश वाली तरङ्ग।
मद्रासी, तामिल, गुजराती, पश्तो उपजाती मन उमंग।।
मिल जाते कहीं कहीं, धर्मी चीनी भाषाओं के दर्शन,
पथ पर बढ़ते जाता, चलते, आना ही वीरों का जीवन।।१६।।
मुस्काओ, मुस्काओ, मुस्काती, जाओ, ओ! वैभव नगरी।
भरती जाओं जीवन की आशाओं से अंतर की गगरी।।
इठलाओं, अनुगत हर्षित हों, विहंसें मानव जीवन घड़ियाँ।।
आयात, अधिक उत्पादन से मुखरित होवें श्रम पंखुड़ियाँ।।

हर्षित हो उठे अमर वैभव, खिल उठें सुमन लेकर उपवन।
प्रति नित्य आरती किया करे, सागर लहरों की रुनुन-झुनुन।।
मानव मन की त्रयकोटि हंसे, पाकर अपने श्रम का विभाग।
हर मुस्काते मुंह से फूटे जीवन का मधुमय का मधुर राग ।।
श्रमजीवी व्यापारी मध्यम, सब करें सुहर्षित सम्मेलन।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन।।२०।।
था कलकत्ता यह, विद्वत्ता गूंजी, ऋषि की दिग्मंडल में।
''आया ऋषि दयानन्द''का स्वर, था जन रच की कल कल में।।
था शुभ प्रमोद कानन हर्षित था, स्वामी का अन्तर ।
परिचय पाकर प्रतिदिन आते, राजा सौरेन्द्र चन्द्रशेखर।।
उपदेशक हेमचन्द्र ऋषि से, सुनते थे जाति भेद वर्णन ।
ईश्वर की लीला का मण्डन, प्रतिमा अर्चन खंडन मंडन ।।
श्री केशव यज्ञोपवीत पर, स्वामी से तर्क किया करते ।
स्वामी भी मंडन कर केशव, अंतरतम दूर किया करते ।।
प्रतिदिन ऋषि चरणों में लगता, रहता था विद्वत्सम्मेलन ।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।२१।।
श्री केशवचन्द्र सेन ठाकुर, देवेन्द्र, द्विजेन्द्र, यहाँ आते।
पंडित श्री तारानाथ तर्क, वाचस्पति आते हर्षाते ।।
श्री सजनारायण घसु, महेश, नैयायिक स्वामी से मिलकर ।
अद्वैत्वाद नर पुनर्जन्म पर, कितनी ही चर्चायें कर ।।
जाते थे, पत्र''पताका''ने जन में''ऋषिगाथा''गाई थी ।
आबाल वृद्ध नारी पुरुषों की, श्रद्धा ऋषि पर छाई थी।।
व्याख्यान कथा उपदेश, शास्त्र चर्चा प्राय: करते ऋषिवर।
तो श्री द्वेषी जन दुर्बलता वश, द्वेष पूर्ण करते अन्तर ।।
इस पूज्य महर्षि ब्रह्मचारी, ने किया सत्य ही संपादन ।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।२२।।
निष्क्रय बैठे करते रहना, है व्यर्थ मनन, ध्यायन, चिन्तन ।
श्री स्वामी अंतर्वाणी कहते थे, जग से कर संभापण।।

९ मार्च निमादित हुई देख ऋषि, बरहागौर रात्रिशाला।
यह कौन रेशमी पट धारण कर, आया जन मन रखवाला।।
प्रिय सरल देववाणी में भाषण; किया मुदित श्रोता अंतर ।
आये समीप श्री लार्ड नार्थब्रुक बोले स्वामी से ऋषिवर।
कितना सुन्दर है ब्रिटिश राज्य, होंगे इससे श्रीमान् सहमत ।
बोले स्वामिन् वर फ्रांस राज्य, है उससे भी जर्मन उन्नत ।।
वे भी सराहते राम राज्य, होता भारत का गुण गायन ।
पथ पर बढ़ते जाना, चलते जाना ही वीरों का जीवन ।।२३।।
ऋषि जय गाथा का गायन, कितने दैनिक पत्र सुनाते थे ।
कितने जन मन द्वेषी आकर, ऋषि चरणों पर नम जाते थे ।।
अक्षय बाबू विद्यासागर श्री, ईश्वरचन्द्र अनेकों जन ।
ऋषि विद्वत्ता अवलोकन कर, करते स्वामी का गुण गायन ।।
हुगली, भागलपुर, पटना, छपरा, वर्धमान कितने जनपद ।
श्री स्वामी की प्रिय वाणी की, सब ने पाई अक्षय संपद ।।
कलकत्ता से चलकर स्वामी, आरा, डुमराऊं, मिर्जापुर।
में गये पुनः दर्शन पाये, भक्तों ने थे जो चिर आतुर ।।
हो धन्य देश भारत तुमने, पाये ऐसे कर्षन नन्दन।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।२५।।
त्यागी तुम थे पर कितने मानव, आकर माथ नमाते थे ।
सज्जन तुम थे कितने अभिमानी, चरणों पर झुक जाते थे ।।
कितने वक्ता निर्वाक् किये पर, स्वामिन् थे तुम मितभाषी ।
पापी नर भी तब दर्शन कर, बन जाते थे प्रभु विश्वासी ।।
जाना हमने कोई तप धारी ही, संसार हिलाता है ।
जाना–जग भी उसके पौरुष, पर डाली सा नम जाता है ।।
प्रभु विश्वासी नर ही जगती तल, को उद्वेलित कर सकता ।
प्रभु विश्वासी ही विष पीकर, संसार पथों पर चल सकता ।।
देखा, हमने प्रभु विश्वासी की, जय ध्वनि करता नील गगन ।
पथ पर बढ़ते जाना चलते, जाना ही वीरों का जीवन ।।२५।।

श्राद्ध और तर्पण

(आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में भले नेत्र वाले अंधे, विवेक के शत्रु, पाखण्ड से भयभीत और जिह्वा के दास श्राद्ध और तर्पण करने में संलग्न है। ऐसे लोगों के लिए श्राद्ध और तर्पण के विशय में महर्शि स्वामी दयानन्दजी महाराज के सत्यार्थ प्रकाश में दिए विचार प्रस्तुत है। आर्यजन इन्हें अधिकाधिक प्रचारित और प्रसारित करें। —स)

"'**पितृयज्ञ**' अर्थात् जिस में जो देव विद्वान्, ऋषि जो पढ़ने—पढ़ाने हारे, पितर माता पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परमयोगियों की सेवा करनी।**पितृयज्ञ के दो भेद हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण।** श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है '**श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्**' जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उस को श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम **श्राद्ध** है। और '**तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्**' जिस—जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें उस का नाम तर्पण है। परन्तु**यह जीवितों के लिये है मृतकों के लिये नहीं।**

ओं ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्। ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्।
ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम्। ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम्।। इति देवतर्पणम्।।

'**विद्वांसो हि देवाः।**' यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। जो विद्वान् हैं उन्हीं को देव कहते हैं। जो सांगोपांग चार वेदों के जानने वाले हों उन का नाम ब्रह्मा और जो उन से न्यून पढ़े हों उन का भी नाम देव अर्थात् विद्वान् है। उनके सश विदुषी स्त्री, उनकी ब्रह्माणी और देवी, उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा उनके सश उन के गण अर्थात् सेवक हों उन की सेवा करना है उस का नाम 'श्राद्ध' और 'तर्पण' है।

अथिर्षतर्पणम्

ओं मरीच्यादय ऋषयस्तृप्यन्ताम्। मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम्।
मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम्। मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम्।। इति ऋषितर्पणम्।।

जो ब्रह्मा के प्रपौत्र मरीचिवत् विद्वान् होकर पढ़ावें और जो उनके सश विद्यायुक्त उनकी स्त्रियां कन्याओं को विद्यादान देवें उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा उन के समान उनके सेवक हों, उन का सेवन सत्कार करना ऋषितर्पण है।

अथ पितृतर्पणम्

ओं सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम्। अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम्। बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम्। सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम्। हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम्। आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम्। यमादिभ्यो नमः यमादींस्तर्पयामि। पित्रे स्वधा नमः पितरं तर्पयामि। पितामहाय स्वधा नमः पितामहं तर्पयामि। मात्रे स्वधा नमो मातरं तर्पयामि। पितामह्यै स्वधा नमः पितामहीं तर्पयामि। स्वपत्न्यै स्वधा नमः स्वपत्नीं तर्पयामि। सम्बन्धिभ्यः स्वधा नमः सम्बन्धींस्तर्पयामि। सगोत्रेभ्यः स्वधा नमः सगोत्रंस्तर्पयामि।। इति पितृतर्पणम्।।

(सोमसदः)'**ये सोमे जगदीश्वरे पदार्थविद्यायां च सीदन्ति से सोमसदः**' जो परमात्मा

और पदार्थ विद्या में निपुण हों वे सोमसद। **'यैरग्नेर्विद्युतो विद्या गृहीता ते अग्निष्वात्ताः'** जो अग्नि अर्थात् विद्युदादि पदार्थों के जानने वाले हों वे अग्निष्वात्त। **'ये बर्हिषि उत्तमे व्यवहारे सीदन्ति ते बर्हिषदः'** जो उत्तम विद्यावृद्धियुक्त व्यवहार में स्थित हों वे बर्हिषद। **'ये सोममैश्वर्यमोषधीरसं वा पान्ति पिबन्ति वा ते सोमपाः'** जो ऐश्वर्य के रक्षक और महौषधि रस का पान करने से रोगरहित और अन्य के ऐश्वर्य के रक्षक औषधों को देके रोगनाशक हों वे सोमपा। **'ये हविर्होतुमत्तुमर्हं भुञ्जते भोजयन्ति वा ते हविर्भुजः'** जो मादक और हिंसाकारक द्रव्यों को छोड़ के भोजन करनेहारे हों वे हविर्भुज। **'य आज्यं ज्ञातुं प्राप्तुं वा योग्यं रक्षन्ति वा पिबन्ति त आज्यपाः'** जो जानने के योग्य वस्तु के रक्षक और घृत दुग्धादि खाने और पीनेहारे हों वे आज्यपा। **'शोभनः कालो विद्यते येषान्तेसुकालिनः'** जिन का अच्छा धर्म करने का सुखरूप समय हो वे सुकालिन्। **'ये दुष्टान् यच्छन्ति निगृह्णन्ति ते यमा न्यायाधीशाः'** जो दुष्टों को दण्ड और श्रेष्ठों का पालन करनेहारे न्यायकारी हों वे यम। **'यः पाति स पिता'** जो सन्तानों का अन्न और सत्कार से रक्षक वा जनक हो वह पिता। **'पितुः पिता पितामहः, पितामहस्य पिता प्रपितामहः'** जो पिता का पिता हो वह पितामह और जो पितामह का पिता हो वह प्रपितामह। **'या मानयति सा माता'** जो अन्न और सत्कारों से सन्तानों का मान्य करे वह माता। **'या पितुर्माता सा पितामही पितामहस्य माता प्रपितामही'** जो पिता की माता हो वह पितामही और पितामह की माता हो वह प्रपितामही। अपनी स्त्री तथा भगिनी सम्बन्धी और एक गोत्र के तथा अन्य कोई भद्र पुरुष वा वृद्ध हों उन सब को अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस–जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहै उस–उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी वह श्राद्ध और तर्प्पण कहाता है।"

अन्यत्र भी श्राद्ध सहित अन्य मिथ्या मान्यताओं का खण्डन प्रश्नोत्तर रूप में किया हैः

"**(प्रश्न)** लोग कहते हैं कि श्राद्ध में संन्यासी आवे वा जिमावे तो उस के पितर भाग जायें और नरक में गिरें।

(उत्तर) प्रथम तो मरे हुए पितरों का आना और किया हुआ श्राद्ध मरे हुए पितरों को पहुंचना ही असम्भव, वेद और युक्तिविरुद्ध होने से मिथ्या है। और जब आते ही नहीं तो भाग कौन जायेंगे? जब अपने पाप पुण्य के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से मरण के पश्चात् जीव जन्म लेते हैं तो उन का आना कैसे हो सकता है? इसलिये यह भी बात पेटार्थी पुराणी और वैरागियों की मिथ्या कल्पी हुई है। हाँ यह तो ठीक है कि जहाँ संन्यासी जायेंगे, वहाँ यह मृतक श्राद्ध करना वेदादि शास्त्रों से विरुद्ध होने से पाखण्ड दूर भाग जायगा।"

"जो मरे हुए मनुष्यों की तृप्ति के लिये श्राद्ध और तर्पण होता है तो विदेश में जाने वाले मनुष्य को मार्ग का खर्च खाने पीने के लिये बांधना व्यर्थ है। क्योंकि जब मृतक को श्राद्ध, तर्पण से अन्न, जल पहुंचता है तो जीते हुए परदेश में रहने वाले वा मार्ग में चलनेहारों को घर में रसोई बनी हुई का पत्तल परोस, लोटा भर के उस के नाम पर रखने से क्यों नहीं पहुँचता? जो जीते हुए दूर देश अथवा दश हाथ पर दूर बैठे हुए को दिया हुआ नहीं पहुंचता तो मरे हुए के पास किसी प्रकार नहीं पहुंच सकता।"

"**(प्रश्न)** गया में श्राद्ध करने से पितरों का पाप छूट कर वहां के श्राद्ध के पुण्य प्रभाव से पितर स्वर्ग में जाते और पितर अपना हाथ निकाल कर पिण्ड लेते हैं। क्या यह भी बात झूठी है?

(उत्तर) सर्वथा झूठ। जो वहां पिण्ड देने का वही प्रभाव है तो जिन पण्डों को पितरों के सुख के लिए लाखों रुपये देते हैं उन का व्यय गया वाले वेश्यागमनादि पाप में करते हैं वह पाप क्यों नहीं छूटता और हाथ निकलता आजकल कहीं नहीं दीखता, बिना पण्डों के हाथों के। यह कभी किसी धूर्त्त ने पृथिवी में गुफा खोद उस में एक मनुष्य बैठा दिया होगा। पश्चात् उस के मुख पर कुछ बिछा, पिण्ड दिया होगा और उस कपटी ने उठा लिया होगा। किसी आंख के अन्धे गांठ के पूरे को इस प्रकार ठगा हो तो आश्चर्य नहीं।"

"श्राद्ध, तर्पण, पिण्डप्रदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुंचता किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोप जी के घर, उदर और हाथ में पहुँचता है। जो वैतरणी के लिये गोदान लेते हैं वह तो पोप जी के घर में अथवा कसाई आदि के घर में पहुंचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती पुनः किस की पूंछ पकड़ कर तरेगा? और हाथ तो यहीं जलाया वा गाड़ दिया गया फिर पूंछ को कैसे पकड़ेगा? यहां एक दृष्टान्त इस बात में उपयुक्त है कि–

एक जाट था। उस के घर में एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देने वाली थी। दूध उस का बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी–कभी पोप जी के मुख में भी पड़ता था। उस का पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का संकल्प करा लूंगा। कुछ दिनों में दैवयोग से उस के बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पोप जी ने पुकारा कि यजमान! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट ने १०) रुपया निकाल पिता के हाथ में रख कर बोला पढ़ो संकल्प। पोप जी बोला–वाह–वाह! क्या बाप वारंवार मरता है?इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुड्ढी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिये।

(जाट जी) हमारे पास तो एक ही गाय है उस के विना हमारे लड़के–बालों का निर्वाह न हो सकेगा इसलिये उसको न दूंगा। लो २०) रुपये का संकल्प पढ़ देओ और इन रुपयों से दूसरी दुधार गाय ले लेना।

(पोप जी) वाह जी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो?क्या अपने बाप को वैतरणी नदी में डुबा कर दुःख देना चाहते हो। तुम अच्छे सुपुत्र हुए? तब तो पोप जी की ओर सब कुटुम्बी हो गये क्योंकि उन सब को पहले ही पोप जी ने बहका रक्खा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सब ने मिल कर हठ से उसी गाय का दान उसी पोप को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पिता मर गया और पोप जी बच्छा सहित गाय और दोहने की बटलोही को ले अपने घर में गाय बछड़े को बांध बटलोही धर पुनः जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशानभूमि में जाकर दाहकर्म्म कराया। वहाँ भी कुछ–कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र सपिण्डी कराने आदि में भी उस को मूंडा। महाब्राह्मणों ने भी लूटा और भुक्खड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध मांग–मूंग निर्वाह किया। चौदहवें दिन प्रातःकाल पोप जी के घर पहुंचा। देखा तो गाय दुह,

बटलोई भर, पोप जी की उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाट जी पहुंचे। उस को देख पोप जी बोला आइये! यजमान बैठिये!

(जाट जी) तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

(पोप जी) अच्छा दूध धर आऊं।

(जाट जी) नहीं–नहीं दूध की बटलोई इधर लाओ। पोप जी विचारे जा बैठे और बटलोई सामने धर दी।

(जाट जी) तुम बड़े झूठे हो।

(पोप जी) क्या झूठ किया?

(जाट जी) कहो! तुमने गाय किसलिये ली थी?

(पोप जी) तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिये।

(जाट जी) अच्छा तो वहां वैतरणी के किनारे पर गाय क्यों न पहुंचाई? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बांध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे?

(पोप जी) नहीं–नहीं, वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन कर उतार दिया होगा।

(जाट जी) वैतरणी नदी यहाँ से कितनी दूर और किधर की ओर है।

(पोप जी) अनुमान से कोई तीस क्रोड़ कोश दूर है क्योंकि उञ्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैऋर्त दिशा में वैतरणी नदी है।

(जाट जी) इतनी दूर तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो उस का उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई। अमुक के पिता को पार उतार दियाय दिखलाओ?

(पोप जी) हमारे पास गरुड़पुराण के लेख के विना डाक वा तारवर्की दूसरी कोई नहीं।

(जाट जी) इस गरुड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?

(पोप जी) जैसे सब मानते हैं।

(जाट जी) यह पुस्तक तुम्हारे पुरुषाओं ने तुम्हारी जीविका के लिये बनाया है क्योंकि पिता को विना अपने पुत्रें के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुंचा दूंगा और उन को पार उतार पुनः गाय को घर में ले आ दूध को मैं और मेरे लड़के बाले पिया करेंगे। लाओ! दूध की भरी हुई बटलोही, गाय, बछड़ा लेकर जाट जी अपने घर को चला।

(पोप जी) तुम दान देकर लेते हो तुम्हारा सत्यानाश हो जायगा।

(जाट जी) चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन लों दूध के विना जितना दुःख हम ने पाया है सब कसर निकाल दूंगा। तब पोप जी चुप रहे और जाट जी गाय बछड़ा ले अपने घर पहुंचे। **जब ऐसे ही जाट जी के से पुरुष हों तो पोपलीला संसार में न चले।** जो ये लोग कहते हैं कि दशगात्र के पिण्डों से दश अंग सपिण्डी करने से शरीर के साथ जीव का मेल होके अंगुष्ठमात्र शरीर बन के पश्चात् यमलोक को जाता है तो मरती समय यमदूतों का आना व्यर्थ होता है। त्रयोदशाह के पश्चात् आना चाहिये। **जो शरीर बन जाता हो तो अपनी स्त्री, सन्तान और इष्ट मित्रें के मोह से क्यों नहीं लौट आता है?**

इस मास की प्रेरक स्मृतियाँ

जन्म : कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा संवत् १९१४ वि. रविवार ४ अक्टू. १८५७
मृत्यु : चैत्र कृष्ण अमावस्या संवत् १९८७ वि. रविवार ३० मार्च १९३०

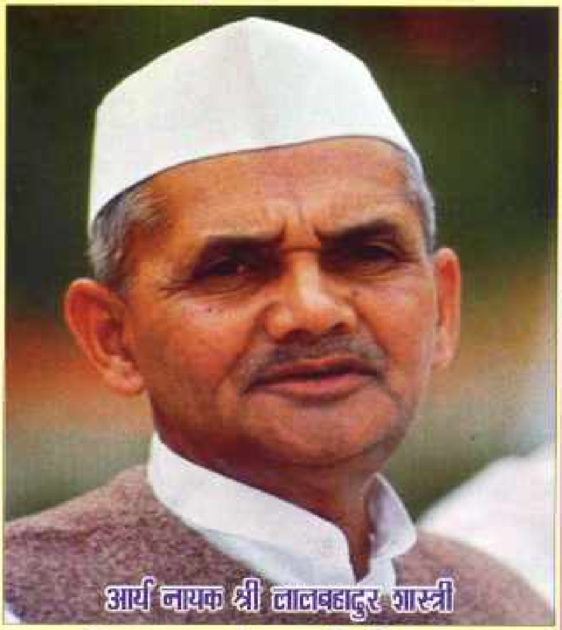

जन्म : अश्विन कृष्णपक्ष ७ संवत् १९६१ वि. रविवार ०२ अक्टू. १९०४
मृत्यु : माघ कृष्ण पंचमी संवत् २०२२ वि. मंगलवार ११ जनवरी १९६६

जन्म : अश्विन कृष्णपक्ष ७ संवत् १९६४ वि. शनिवार २८ सितम्बर १९०७
मृत्यु : चैत्र शुक्लपक्ष ४ संवत् १९८८ वि. सोमवार २३ मार्च १९३१

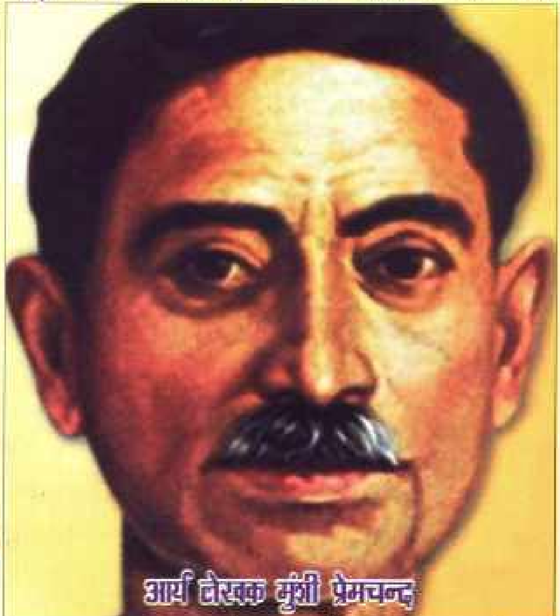

जन्म : श्रावण कृष्णपक्ष १० संवत् १९३७ वि. शनिवार ३१ जुलाई १८८०
मृत्यु : आश्विन कृष्ण ६ संवत् १९९३ वि. गुरुवार ८ अक्टूबर १९२६

Postal Reg. Jodhpur/434/2018-20

Date Of Posting 9,10-09-2020
Date Of Print 5-9-2020

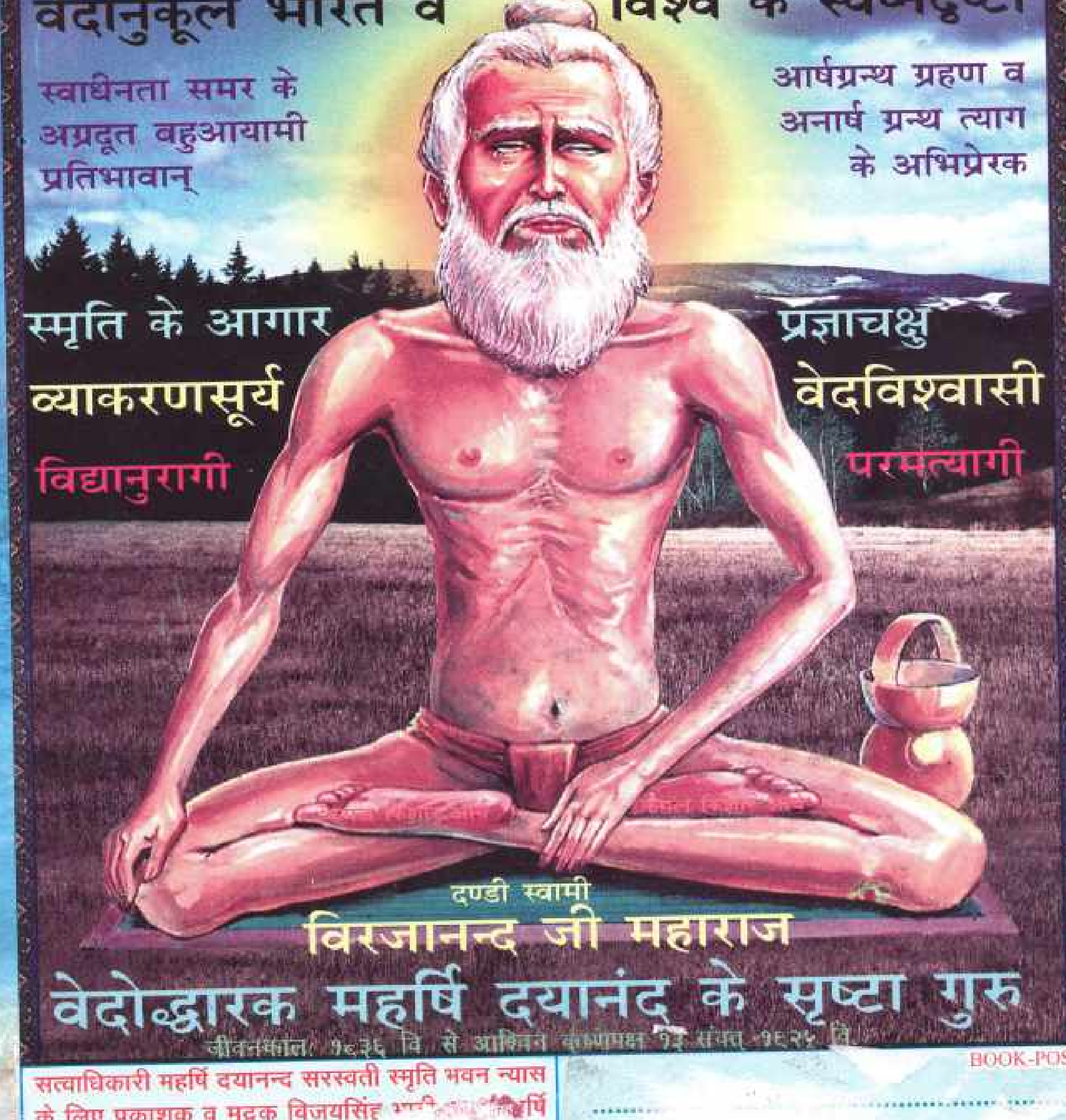

BOOK-POST

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुदक विजयसिंह ... र्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, म ... र्ग, मोहनपुरा पुलिया के पास जोधपुर (राज ... काशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराणा मौहल्ला के ... जोधपुर फोन 9829392411 से मुदित ।
सम्पादक फोन नं. 9460649055